यह नायिका अथवा नायक मुसकान देख्यो चाहतहै सो अपने नेत्रकी आसक्ति कहतहै ॥ सवैया ॥ देखतही अनिमेषरहे उमड़े से परे न बिचारतगोहूं । रावरे रूप अनूपसों पूरि रहेहैं जऊ नखतेशिखलोंहूं ॥ मांगतहै इतने परतो मधुरी मुसक्यानि अघात न त्योंहूं । नैनभये अतिलालचीये ललचानकी बान न छांड़त क्योंहूं ॥ २१६ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० नेकहँसोंहींबानितजि लख्योपरतमुखनीठि ॥
चौंकाचमकनिचौंधमें परतचौंधसीदीठि॥२१७॥

यह अकारण हँसी जानि गुरु सखी नायिकासों शिक्षाके प्रसंग में चौंका की चमक की बड़ाई करै अथवा नायकहू नायिकासों कहै तो संभवहै ॥ कवित्त ॥ तैसीये जगतिज्योति शीश शीशफूलन की चिलुकततिलक तरुनि तेरेभाल को । तैसीये दशनद्युति दमकत केशोराय तैसोई लसत लाल कण्ठ कण्ठमालको ॥ तैसीये चमकचारु चिबुक कपोलन की झलकत तैसो नकमोती चलचाल को । हरेहरे हँसि नेक चतुर चपलनैन चितु चकचौंधे मेरे मदनगुपाल को ॥ २१७ ॥ मरकट अक्षर ३२ गुरु १७ लघु १५ ॥

दो० ठोढ़ीगाड़वर्णनं॥डारैंठोढ़ीगाड़गहिनैनबटोहीमारि॥
चिलकचौंधमेंरूपठग हांसीफांसीडारि ॥ २१८ ॥

यह ठोढ़ीकी गाड़को वर्णन नायक नायिकासों कहै ॥ सवैया ॥ केशन के वन के उपकूलतहीं भृकुटी गिरिओट बिचारै । चारु लिलार शिंगार की चौंध में देतप्रचंड दगा नहिं हारै ॥ फांसी गरे मुसकानकी पारिकै ठोढ़ी की गाड़ कुवां गहिडारै । प्यारी महाठग तेरोस्वरूप दयातजि नैन बटोहिन मारै ॥ २१८ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० ललितश्यामलीलाललन बढ़ीचिबुकछबिदून ॥
मधुछाक्योमधुकरपर्‍यो मनोगुलाबप्रसून॥ २१९॥

यह नायिका की ठोढ़ीपै लीला की शोभा सखी नायकसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ कुंकुम गौरिकियो मनुतेह महासुकुमार सुगंधको भौना । रूपसुधा भर्‍यो चन्दसों आनन लाललसै मनको ललचौना ॥ ठोढ़ी की गाड़में श्यामलबिंदु निहारत चाहि थकेमनुगौना । कै मधुपान गुलाबके फूलमें मत्तपर्‍यो मनो भौंर को छौना ॥ २१९ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० खरीलसतगोरीगरे धसतपानकीपीक ॥
मनोगुलीबँदलालकी लाललालद्युतिलीक ॥२२०॥

यह कण्ठ वर्णन है सुकुमारता सखी नायकसों कहै ॥ सवैया ॥ प्यारे मैं पियारी तिहारी लखी नखते शिखलौं सुनिकाई भरी है । केशरिकी सुकुमारि मनो छविपुञ्जसों ओप विरंचि करी है ॥ गोरीके गोरे गरे मनु मोहति सोहति पीक की लीक खरी है । चीरगुलीबँद लालको लाल मनो द्युतिकी प्रतिलीक परी है ॥ २२० ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० कुचगिरिचढ़िअतिथकितह्वैचलीडीठमुखचाड़ ॥
फिरिनटरीपरियेरही परीचिबुककीगाड़॥२२१॥

यह अङ्ग देखत देखत दृष्टि ठोढ़ी की गाड़ में जायपरी सो टरतिनाहीं सोनायक अपनी अवस्था नायिका सों कहै अथवा सखी सों कहै ॥ सवैया ॥ दीठिनदी त्रिबली तिरनीठि रुमावलि काननते निकरी है । पीन उरोज पहार चढ़ी अति थाकि तऊ न वहां ठहरी है ॥ चाहि चली मुखमण्डलकी छवि बीचहीते बिधि ऐसी करी है । ठोढ़ीकी गाड़ गढ़ेमें परी सुपरीयेपरी न तहां ते टरी है ॥ २२१ ॥ त्रिकल अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० चलननपावतनिगममगजगउपज्योअतित्रास ॥
कुचउतंगगिरिवरगह्यो नैनाभैनमवास ॥ २२२ ॥

नायक नायिकासों कहै सखी कहै तौऊ बनै ॥ सवैया ॥ लूटतमाल मुनिन्दनके मन ज्ञान त्रिसांतलेको निबह्यो है । वेदको पन्थ चलै कहि कैसे सबै जगमें अतित्रास चह्यो है ॥ कृष्ण कहै त्रिबली सरितारु मिली बनपास गढ़ा सुलह्योहै । ऊंचे उरोजपहारके ओर मनोजमहीपमवास गह्योहै ॥ २२२ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० दुरतनकुचबिचकंचुकी चुपरीसारीसेत ॥
कबिआंकनकेअरथलौं प्रगटदिखाईदेत ॥ २२३ ॥

यह कञ्चुकीके बीच कुच शोभायमानहैं तिनकीप्रभादेखि नायक नायिकासों कै सखी नायिका सों कहै नायकसों कहै ॥ कवित्त ॥ कञ्चनबरन मनहरन अडोल गरु वैसे गोल गोरेशीश श्यामताधरतुहै । उन्नतकरेरे खरे चिकने सुनाई भरे मदन वशीकरसे मनको हरतुहै ॥ ऐसे कुचभीनी सित कंचुकी तलांछीमांझ प्यारी ये दुराये न दुरत उघरत है । कहै कविकृष्ण जैसे सुकवि के आंक

में भरथ उमंग डीठि प्रकट परतुहैं ॥२२३॥ त्रिकल अच्छर ३६ गुरु ६ लघु ३०॥

दो० उरमानिककीउरबशी तटउघटतदृगदाग ॥
छलकतबाहिरभरमनोंतियहियकोअनुराग २२४

यह उरबशीकी शोभा सखी नायिकासों कहै याके अनुरागकी पूर्णता प्रकट करतिहै जो सखी नायिकासों कहै तो तियपदतें संबोधनहोय नायिका लक्षिता॥ कवित्त॥ हिये आलबालतें प्रकट कोकनद फूलयो किधौं अनुराग आभा उमंगी है घरघर। ईश्वर सुमति किधौं भोरही उदितभानु बैठी चक्रवाकन के प्रेमको प्रकट कर॥ मोतिन की माल सोहै गंगाजूकी धारा तामें ध्यानलाय तीसरो नयन खोलि दीनो हर। मानक नियम कुचअग्र उरबशीमोहै मंगल मुदित मानों मेरुके शिखर पर॥ २२४ ॥ नरअच्छर ३६ गुरु १५ लघु २४ ॥

दो० घड़ेकहाबतआपसों गरवेगोपीनाथ ॥
तोबदिहौंजोराखिहो हाथनुलखिमनुहाथ २२५॥

यह नायिकाके हाथकी शोभा सखी नायकसों कहति है॥ कवित्त॥ सिंधु मथिशशि शशिमथि नखबाके नेहौ कीनेहैं सुरति कहै कवि पातियाइ है। चीर के कलपतरु कीये आंगुरीनकरी मनहोत वहि मनचिते फल पाइहै॥ कमला हियेके कंज दलकीहथेरीकीनी तापर भँवर भये भांवरेही खाइहै। हौंतो त्रिभुवननाथ जानि होपै ऐसे तिय हाथन निरखि जब हाथनि बिकाइहै॥ २२५॥ पयोधर अच्छर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० नखरुचिचूरनडारिकै ठगुलगायनिजसाथ ॥
रह्योराखिहठलैगयो हथाहथीमनुहाथ ॥२२६॥

हाथकी शोभा देखि नायकको मनु याके हाथ नाहीं रह्यो सो नायक अपने मन की गति सखीसों कहतहै नायिकाहू सों कहै॥ सवैया॥ बूंदलसै मेहँदी के सुरंग उहीं अरु नायक रंगरचेके। रेखबशीकरमंत्र दिखायके साथ लगायलियो अपने के॥ चारुनखाद्युति चूरन डारि अधीनकियो बहुभांति भुरैके। राखेहूं पै न रह्यो ममहाथ हथाहथी हाथगयो मनु लेके॥ २२६॥ वारन अच्छर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० गोरीछिगुनीअरुननख छलाश्यामछबिदेय ॥
लहतिसुकतिरतिपलकुयह नैनत्रिबेनीसेय२२७

यह नायिकाकी अँगुरीकी शोभा नायक कहतहै ॥ सवैया ॥ कोवरीगोरी लसै छिगुनी अरु लालप्रभा नखकी सुखदैनी । तापर श्यामछलाकी फबीछबि नैननकी लखि लागत ऐनी ॥ लोचनसंत लहै रतिमुक्तनि सेवक देखतही मृगनैनी । तोकर माहिं बिराजतहै यह तीरथराजकी रीति त्रिवैनी ॥ २२७ ॥ त्रिकल अक्षरं ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० बढ़तनिकसिकुचकोररुचि कढ़नगोरभुजमूल ॥
मनुलुबिगौलौटनुचढ़त चौंटतऊंचेफूल॥२२८॥

यह नायिका जाछबिसों देखी है सो नायक सखीसों कहत है ॥ सवैया ॥ चन आजुलखी बृषभानुसुता जगज्योतिरही चहुंकूलन की । चिहुटी चित में उकसायें भुजा वह चौंटनि ऊंचित फूलनकी ॥ बढती कढ़बे कुचकोरनकी रुचि चारुप्रभा भुजमूलनकी । लढिगो मनुलौंट बिलोकतही छबि मोहिं न कैसेहुं भूलन की ॥ २२८ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० फरउठायघूंघटकरत उसरतपटगुझरोट ॥
सुखमोटैलूटीललन लखिललनाकीलोट॥२२९॥

यह नायिकाकी लौटकी शोभा नायकने देखीहै सोसखी सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ जातिही बाल गली में अलीसंग आवत मोहन देख्योअगोटैं । ज्यों क्रिये घूंघट हाथ उठायकै त्योंउसरी पटकी गुझरोटैं ॥ सो छबिमोपै कहीनपरै कछूकौरिन कोर लुटी सुखमोटैं । लाललख्यो अतिमोद हिये नव नागरिकी निरखी जब लोटैं ॥ २२९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ कटित्रर्यानस् ॥

दो० लगीअनलगीसीजुबिधि करीखरीकटिखीन ॥
कियेमनौवेहीकसरि कुचनितंबअतिपीन २३०॥

यह नायिकाकी कटि यौवनके आयेते घटबढ ह्वैगई है सो सखी नायक सों कहति है कबिहूकी उक्तिहोय ॥ कबित्त ॥ रूपसांचे ढारे रचिपचिकै सुधारे बिधि अंग अंग सकल सुदेश रसभीने हैं । तापै तरुणाई ने बनाई कछु औरै बिधि खीन करे पीन अरु पीन करे खीने हैं ॥ छोलि छोलि ठाकुअति सूक्षमकै राखे ताहि लचकत जानिकै यतन ऐसे कीने हैं । करिहांकी कृशता की साधिकै कसर मानों उरज नितंब अतिपीन करिदीनेहैं ॥ २३० ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लहलहाततनतरुनई लचिलगलौंलफिजाय ॥

लगैंलांकलौइनभरी लेइनलेतलगाय ॥ २३१ ॥

यह नायिकाकी जो शोभा देखी है सो नायक सखीसों कहत है अथवा सखी नायिका सों कहै तो संभव है ॥ कवित्त ॥ लकलके तनमें लहलहाति तरुनाई ता-कीनई अरुनई रही छबिछायकै। कुचनके भार चप लगलौं लफति जब चलाति ग-यंदगति सहज सुभाय कै ॥ कहैं कविकृष्ण नखशिखलौं लुनाईभरी मानौं महामोह-नीने देहधरी आइकै। सूक्षमलसत अति चारि को सो आंकु ऐसे लगै लांकबारी लेत लोइन लगाय कै ॥ २३१ ॥ बारनअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० बुधिअनुमानप्रमानश्रुति कियेनीठठहराय ॥
सूक्षमकटिपरब्रह्मकी अलखलखीनाहिंजाय २३२॥

यह कटिबर्णन सखी सखीसों कहै नायकसोंकहै नायिका सखीसों कहै नायक सों कहै कविहूकी उक्तिहोय ॥ कवित्त ॥ सुमन में बास जैसे सुमन में आवै कैसे नाहीं नाहीं कही जाति हां कहां चलत है। सुरसरि सूरतनया में सुरसती जैसे बेदके बचन सांचेसांचे निबहतहै ॥ बुधिअनुमानते प्रमान पारब्रह्म ऐसे कामिनीकी कटि कबि मीरन कहत है॥ परिवाके शशिकी कलाज्यों रहै अम्बर में परिवाको अच्छ परतच्छ न लहत है ॥ २३२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० जंघयुगलजोइननिरे करेमनोबिधिमैन ॥
केलितरुनदुखदैनये केलकलासुखदैन ॥२३३॥

जंघकी शोभा नायक सखी सों कहै सखी नायकसों कहै ॥ सवैया ॥ कारे करेरे कुरूपकरीकर क्यों समहोव प्रभा इनकी के। सोहत सुन्दर पीन सचिक्कन मो-हनहैं मनमोहन पीके॥ केलिकलोल कलाके निधान महादुखदायक हैं कदलीके। तो सुगजंघ बिरंचि मनोज बनायकरे निरलोयनहीके ॥ २३३ ॥

दो० रह्योढीठढाढसगहै शशिहरगयोनसूर ॥
मुख्योनमनमुरवानिचुभि भौंचूरनचपिचूर २३४

यह मुरवानिकी शोभा में नायक को मन चुभ्यो है सो सखीसों कहतहै नायि-काहू सों ॥ सवैया ॥ मान पियारी के पांयन ऊपरि पुंज प्रभाको परै उमग्योई। देखतही अति रीझिकै चायसों जायतहां मनमेरो लग्योई॥ सूररह्यो अति साहस कै कविकृष्ण कहैं न डराय भग्योई। चूरभयो चपि चूरनसो पै तऊ न मुर्‌यो मु-रवान पग्योई ॥ २३४ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० पायँमहावरदैनको नायनबैठीआय ॥
फिरिफिरिजानिमहावरी ऍड़ीमीड़तजाय २३५॥

यह नायनकी सहस अरुणाई को अधिक सखी सखीसों कहतिहै नायकहू सों कहै तो संभषहै ॥ कवित्त ॥ मंदहूखपैते चन्दबधू के बरणहोत प्यारीके चरण नवनीतहूंते नरमें । सहजललाई काशीराम बरणी न जाय जिनके निहारे कबिहूकी मति भरमें ॥ ऍड़ी ठकुराइनिकी नाइनि गहति तब ईंगुर सो रंग दौरिजात दरवरमें । दीनी है कि दैवी है निहारे सोचे बार बार बावरी सी ह्वै रही महावरले करमें ॥ २३५ ॥ मरकद अच्छर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० कोहरसीएंड़ीनकी लालीदेखिसुभाय ॥
पायमहावरदेनको आपभईबेपाय ॥ २३६ ॥

यह नायिकाकी एंड़िनकी शोभा सखी नायकसों कहै॥कवित्त॥कोहरुकहा है बंधुजीव को बिलोक्यो चाहै लाजनते कमल मुदित फूलि फूलिकै । मानिक पँवारी बिम्ब कैसे पटतरहोत ऐसी द्युति सहज उठति ऊलिऊलिकै ॥ चाइन सों चाइन महावर लगायबेको आई ठकुराइन निकट अनुकूलिकै । कहै कबिकृष्ण चारु बदन बिलोकतही नाइन बिचारी गई सबसुधि भूलिकै॥२३६ ॥मत्त अच्छर ४१ गुरु २७ लघु १४ ॥

दो० अरुणबरणतरुणीचरण अँगुरीअतिसुकुमार ॥
चुवतसुरँगरँगसीमनो चपबिछियनकेभार२३७

यह चरणांगुलीनकी शोभा नायक सखीसों कहतहै नायिकाहूसों कहै सखी सखीसों कहै कबिकी उक्तिहोय ॥ कवित्त ॥ मन्दगति हरै कलहंस न लहत कल समद गयंदनको गरबगरत है । कृष्ण प्राणप्यारे चारुचरण निहारे वाके जलज समूह जियलाजहि धरत है ॥ अतिसुकुमार तरुणीकी पग अँगुरीन ऐसी अरुणाई को उजास उघरतहै । मेरेजान परयो बिछियान को अपार भार ताहीसों उमंगरंग निचुरयो परत है ॥ २३७ ॥ मराल अच्छर ४२ गुरु ८ लघु ३४ ॥

दो० पगपगमगअगमनपरत चरणअरुणद्युतिऊलि॥
ठौरठौरलखियतउठे दुपहरियासेफूलि॥ २३८॥

यह नायिकाके चरणन में अरुणता की अधिकताई सखी नायक सों कहै नायक नायिकासों कहै सखीसों सखी नायकसों सखीसोंकहै ॥ कवित्त ॥ प्यारीके

फगन पाय ऐसी अरुणाई ताते सुगधिबधून दिनमांझकर भाष्यो है । बागहै कहत वाके शिशिरलुनानहू में किशलय अली तोरिबेको अभिलाष्यो है ॥ चिन्तामणि चांदनी बिछौना पर आवैलाल मखमल को बिछौना मनुमाहैं नाख्यो है । चरण धरतवाके आंगनपटिकबन्ध मानौ लालबिद्रुमदलनि बांधि राख्यो है ॥ २३८ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो०. सोहतअँगुठापाँयके अनवटजर्योजराय ॥
जीत्योतरवनिद्युतिसुढर पर्योतरनिमनोपाय २३९

यह नायिका के शृंगारका आरम्भ है सो एकही अनवट पहरयो है ताकी उपमा सखी नायिकासों कहतिहै ॥ सवैया ॥ प्यारी शृँगार सवाँरन बैठी अचानक आयो तहां दधिदानी । ज्योंहुती त्योंहीं रही नवनागरि नन्दकिशोर के रूप लुभानी ॥ नीको जराव अनोटलसे पगके अंगुठा उपमा सो बखानी । पायँ पर्यो है मनो रविआयकै तेजकी हारि तरयोनासों मानी ॥२३९॥ बाधकअक्षर ४४गुरु ४लघु ४० ॥

दो० सरसकुसुममड़रातअलि नझुकिझपटिलपटात ॥
दरसतअतिसुकुमारतापरसतमनुनपत्यात २४०

यह सुकुमारता बिशेष है अरु कोऊकसखी नायिकासों अनभिज्ञ जानत है सो नायक की सखी भ्रमरके प्रसंगकरि अन्योक्ति में वाको भ्रम निवारण करति है ॥ कबित्त ॥ सुखको अगार उपवनको शृँगार चारु सौरभ बिबिध उमगत जाको गात है । सरसको सुमनु सरस अति शोभासन्यो निरखि लुभानो अलि देखे न अघात है ॥ कहैं कवि कृष्ण अतिरीझपर्यो आस पास रहै मड़रानो न झपटि लपटातहै । दरसत ताकोतन अति सुकुमार तातें परसत वाकोमन क्योंहू न पत्यातहै ॥२४०॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० भूषणभारसम्हारिहै क्योंयहतनसुकुमार ॥
सूधेपायँनपरतधर शोभाहीकेभार ॥ २४१ ॥

यह सुकुमारता है सखी नायक सों कहतिहै कि भूषण पहिरत बिकल होय याते बेगचलै ॥ कबित्त ॥ बोलनि चलनि चतुराई चितवनितिन चाहि नाहिचित और तौर ठहरातु है । वाको अंगउघटि जुओपीतिय मेलछवि तेऊ उपमादै और सुकवि सिहातु है ॥ क्रूरता निहारि सुकुमारजी बिचारि यह कीनेबिन भूषणहि भूषणसो गातुहै । सकिहै सम्हार कैसे आभरण भारपाई आभाहूको भारनसम्हारयो तनजातुहै ॥ २४१ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मैंबरजीकैबारतू इतकितलेतकरौंट ॥
पँखुरीलगैगुलाबकी परिहैगातखरौंट ॥ २४२ ॥

यह नायिका विश्रब्ध नवोढाहै सपने में थिरता नाहीं याते सखी डरदिखाय शयन करावति है ॥ सवैया ॥ मैंबरजी बहुबार अहे नहिं मानततू सो कहाधौं करैगी । लेतकरौंट इतै मुरि क्यों अरबी उरकोलौं इतैक धरैगी ॥ कोमल आपने अंग निहारि तबै सुकुमार सुक्यों सम्हरैगी । पांखुरीगात गुलाबकी जो गड़िजैहै कहूं तौ खरौंट परैगी ॥२४२॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥ यह नायक के हृदय में नायिका बसै ॥

दो० नजकधरनहरिहियधरे नाजुककमलाबाल ॥
भजतभारभयभीतह्वै घन चंदनबनमाल॥२४३॥

॥०यह नायक के हृदय में जो नायिका बसति है ताविपरीतको अधिक सखी सखी सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ निजभक्तनके हितको कमलापति संततचित्त बिचारकरैं । अतिचन्दन अंगलगावैं नहीं बहुफूलनको नहिं मालधरैं ॥ अरु जो कबहूंक शृंगार सजैं कवि कृष्ण तऊ कलकैसेपरैं । यह शोचहिये निशिद्यौस डरै अति नाजुक श्रीमति भारभरैं ॥ २४३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छालेपरिबेकेडरनि सकतनहाथछुवाय ॥
झिझकतहियेगुलाबकेझमाझमावतपाय २४४॥

। यह नायिकाके चरणनकी सुकुमारता सखी नायिकासों कहतिहै सखीहू सों कहै ॥ सवैया ॥ पौनलगै अलिपंखेको होति चलाचल कैसे बयारकरैं । कृष्णकहैं कहूंकेशरि अंग लगाये तौ सौति उछाहभरैं ॥ प्यारीके नाजुक पायँ निहारिकै हाथ लगावत दासीडरैं । धोवतफूल गुलाबकेलै पै तऊ झझकै मतिछालेपरैं ॥२४४॥ मराल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥ शिक्षा ॥

दो० लग्योसुमनह्वैहैसफल आतपरोसनिवारि ॥
बारीबारीआपनी सींचसुहृदताबारि ॥ २४५ ॥

सखीको बचन नायिकासोंहै शिक्षारूप॥कबित्त॥ बारीहै न बावरि तू देतलड़बावरचो क्यों मान करिबेको उरमें सरबिचारिये । अबहीं तो नेह बेलि नवल लगाई ताहि जतन जतन दृढ़करिपेपि पारिये ॥ लाग्योहै सुमन सुतौ होहिगो सफल अब कहैं कविकृष्ण रिसआतप निवारिये । सीखमानिमेरीमति सौतिनुके बैनकरे प्यारी

प्रीति रसहीसों सींचिहित वारिये ॥ २४५ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो॰ तूरहिहौंहीसखिलखो चढ़नअटाबलिबाल ॥
सबहिनुबिनहींशशिउदै दीजतुअरघअकाल २४६

यह नायिकाके मुखकी शोभा अधिकायहै सो सखी नायिकासों कहतिहै॥ सवैया ॥ हौंही अटा चढिहौं शशिदेखन तू सजनी रहि आंगनही तिन। और कितेकव्रती वनिता सब देखत चंद्रउदो छिनुही छिन ॥ तो मुखदेख उछाह भरी सब देहिंगी अर्घ मयंक उदैबिन । औरन को व्रतभङ्गकरै मति होहिगो पातक मान कह्यो किन ॥ २४६ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो॰ दियोअरघनीचेचलौ संकटभानोजाय ॥
सुचतीह्वैऔरौसबै शशीविलोकैंआय ॥ २४७ ॥

नायिकाके मुखकी शोभा सखी कहतिहै ॥ सवैया ॥ पूजि निशाकर अर्घदियो अब नीचे चलौ बलि संकटभाने। औरनकी दुचिताई मिटै जिन साध उपास मनोरथ ठाने ॥ चंद्र उतै इत तो मुखचंद कितै बिनवैं चित शोच समाने। वै अपने व्रतपूरेकरैं जुरहीचकि आजुरजैवर आने ॥ २४७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो॰ कहालड़ैतेदगकरे परेलालबेहाल ॥
कहूंमुरलिकापीतपट कहूंमुकुटबनमाल॥२४८॥

यह नायिकाके नेत्रदेखि नायककी जो दशाभई सो सखी नायिका सों कहतिहै प्रयोजन कि तेरी चाहहै तू चल॥ कबित्त ॥ कहूं बनमाल कहूं गुंजनकी माल कहूं संगसखाग्वाल ऐसे हाल भूलगये हैं। कहूंमोरचंद्रिका लकुट कहूं पीतपट मुरली मुकुट कहूं न्यारे डारिदये हैं ॥ कुंडल अडोल कहि सुन्दर न बोलैं बोल लोचन हैं लोल मानों काहू हरिलये हैं। घूंघटकी ओटह्वैकै चितई की चोटकरि लालन तो ता घरीतें लोटपोट भये हैं ॥ २४८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो॰ पियमनरुचिह्वैबोकठिन नरुचिहोतशृंगार ॥
लाखकरोआंखिनबढ़ैबढ़ैबढ़ायेबार ॥ २४९ ॥

यह नायिका शृङ्गार करिकै बिलंब करतिहै सो सखी नायकसों कहति है अथवा तियको शृङ्गार देखि याके ईर्षा भई सो सखी सों कहतिहै यातें प्रेमगर्विता होय ॥ कबित्त ॥ बैठ्यो कुंजसदन बिलोकत है तुवमग तेरो नाम मोहन रटत बारबारही।

उठचलि हिलमिल मानिरंगरली अली मेरो कह्योमान अनगवति कहारही॥ पिय मन बसिकरिबो यह कठिन अरु तनद्युति सरसति साजैहू शृङ्गारही। कहै कवि- कृष्ण कीजै लाखकयतन तऊ लोचन न बढ़त बढ़ाये बढ़ै बारही॥ २४६॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० गहलीगरबनकीजिये समैसुहागहिपाय॥
जियकीजीवनजेठसों माहनछांहसुहाय॥२५०॥

यह सखीको शिक्षाहै अरु ज्येष्ठाके भेदमें यासों नायकको हेतु अधिकजानिकै तिहूँको कहबो सम्भव है॥ सवैया॥ अलिहौं समझावत तोहिं यहै तजिमानदहा सुख देह हमैं। फलक्यों न लहै बलियौबनको मनमोहनसों मिलि क्यों न रमैं॥ लहबावरी पाय सुहागसमौ जिनयेतौ गुमानधरै जियमें। सबको वह जेठमें जीवनि मूरि सुछाँह सुहाय न माह तमें॥ २५०॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० सघनकुंजघनघनतिमिर अधिकअँधेरीराति॥
तऊनदुरिहैश्यामयह दीपशिखासीजाति॥२५१॥

यह नायिका नायक सघनकुंजनमें निशंक बैठे हैं सो गुरु सखी नायक से नायिकाकी दीप्तिको वर्णनकरि शिक्षाकरतिहै अरु नायक सखीसों कहै है वा नायकको लेआव अथवा कुंजमें लैचलि तहां सखी को कहबो सम्भवहै॥ सवैया॥ वाके समीप नहींहूंदुरौं लखिलेत वे दूरहिंते उपहासी। कीजै कहा बसुहैकछु जो बिधि या बिधि दीपतिहै परकासी॥ काहूकी आंखिन मूंदि न जानत हूं बलिजाऊंन हूजे उदासी। लाऊं सकैसे अँधेरहूं मांझ उजेरी जूनागरि दीपशिखासी॥ २५१॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० फूलीफालीफूलसी फिरतजुबिमलबिकास॥
भौंतरैयाहोहुते चलत तोहिंपियपास॥२५२॥

यह मनायबो सखी नायकसों कहति है॥ कबित्त॥ निरखि निकाई तेरी हौंतो हौंबिकाई बलि तुहूअलबेली कछू मेरी कह्यो करैगी। तेरी तन द्युति आगैं रति न रतीक लागैं सांची कहि कौलौं ऐसो हठ उरधरैगी॥ फूलीफाली फिरत शृङ्गार सजैं सौति तेरी तिनके कुमानकाहि तूधौं कबहरैगी। भौंरकतरैया सम देखियेगी प्यारी सब हितूकरि जबतू पियाकी ओर ढरैगी॥ २५२॥ शृङ्गार अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० तनभूषणअंजनदृगनपगनमहावररंग ॥
नहिंशोभाकोसाजियतुकहिबेहीकोअंग ॥ २५३ ॥

यह नायिकाके अंगकी स्वाभाविक शोभा सखी नायिकासों कहति है ॥ कबित्त ॥ सहज अरुण गुलफनते उठतछटा तिनके निकट कहा जावकको रंगुहै। गातकी गुराई आगे कञ्चन के आभूषण फीके से लगत रंच शोभा को न संगु है ॥ अंजनहूं आंजेबिन नैन कजरारे दीखैं खंजन अनेकनको होत मान भंगु है। तो वन शृंगार कछू शोभाको न साजियतु अबहीं अज्ञान अहबातहीको अंगु है ॥ २५३ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बेंदीभालतमोरमुँहसीससिलसिलेबार ॥
दृगआंजेराजैखरीएहीसहजशृँगार ॥ २५४ ॥

यह नायिका की सहजकी शोभा सखी नायक सों कहति है ॥ कवित्त ॥ केसरि की बेंदी भाल भौंह मधि राजत है सुरंग कपोल तिल सोहत अपार हैं। पान भरे आनन कटाक्ष दृग कानन लौं सोहैं कच श्याम मखतूल केसे तार हैं॥ बेसरिको मोती छबि नेह उभकावनको भरमी सुकबि अंगअंग सुकुमार हैं। लाखहीकी चूरी यह लाखनु लहति अरु सादगी की सादगी सिंगार को सिंगार है ॥ २५४ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० खरीपातरीकानकीकौनबहाऊबान ॥
आककलीनरलीकरैअलीअलीजियजान॥२५५॥

यह नायिका को अन्यासक्त जानि नायकके मनमें भ्रम भयो है सखी निवारण करति है ॥ सवैया ॥ बोलसिरीरुख बंधन नाहिंनै गंधसुहात न गन्धफली को। आरति मालतिकी न रती लवलेश न भावत है लवलीको ॥ बारही दूषण दैनयके बसि को न कहाऊं कनैर कलीको। माधुरीकी मधुराई बँध्यो न चलै चित अंककी ओर अली को ॥ २५५ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० तोरसराच्योआनबसकहैंकुटिलमतिकूर ॥
जीभनिबौरीक्योंलगैबौरीचाखिअँगूर ॥ २५६ ॥

नायिकाको अन्यासक्त निश्चय जानि नायक सखीसों कहै तो सखी भ्रमनिवारण करति है ॥ सवैया ॥ तेरोही ध्यानधरै नँदनंदन काननहूं सुनैं तेरी कथा है। तो रसरंग में पागि रह्यो निशिबासर तेरोई रूप सराहै ॥ ताहि तू और

सौं राख्यो कहै कहि मोसौं हहा मन आय कहा है। बावरी देखु बिचारि हिये
कोउ दाखहि खाय निबौरि चहाहै ॥ २५६ ॥ मंडूक अक्षर ३० गुरु १८
लघु १२ नायिका की चेष्टा ॥

दो० डोरीलाईसुननकीकहिगोरीमुसकात ॥
थोरीथोरीसकुचसोंभोरीभोरीबात ॥ २५७ ॥

नायिका प्रौढाने नायककी चेष्टा देखी है सो सखी सखीसौं कहति है ॥
सवैया ॥ जादिनते वह सांवरो नैन सौं नैन मिलै मुसका गयोहै। ता दिनते कबि
कृष्ण कहैं मन वाहीके हाथ बिकाय गयोहै ॥ थोरीसी लाज गहै हित चीकनी
भोरीसी बात बनाय गयो है। कानन को अब वे बतियां सुनिवेही की डोरीलगाय
गयोहै ॥ २५७ ॥ वारन अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० जौलौंलखोंनकुलकथाबिकसौलौंठहराय ॥
देखैआवतदेखहीक्योंहूरह्योनजाय ॥ २५८ ॥

यह नायिका प्रौढा अपनी दृढता सखी सौं कहति है अरु नायिका को
स्वरूप ऐसो सुन्दर है जो देखेते क्योंहू नाहीं रह्यो जातु नायिका को बचन
सखी सौं सखी को बचन नायिका सौं सम्भव है कि ताहि देखत नाहीं तौलौं
कुलकथा दृढ़ देखेते क्योंहू रह्यो न जायगो ॥ सवैया ॥ जौलौं न डीठिपरै
मनमोहन हौं न बदौं सखि तौलौं सयानहिं। ठीक जु ठानि पतिव्रत को करिले
कुलकान कथा के बखानहिं ॥ लोचन क्योंहू न रोके रहैं जब देखति वा मृदु
मूरति कानहिं। देखे विना न रह्यो परै कैसेहू मेरो कह्यो किन सांचकै मानहिं ॥
२५८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० रहनसक्योकसकररह्योबासिकरलीनोमार ॥
भेददुसारकियोहियोतनद्युतिभेदीसार ॥ २५९ ॥

यह नायिकाकी तनद्युति सखी नायकसौं कहतिहै ॥ सवैया ॥ राधिका
रंगभरी को मनो बिधितीनहूं लोकको रूप दियोई। ताहि अली अवलोकतही
बिबिनैनन प्रेम पियूष पियोई ॥ यद्यपि केतो रह्यो कसकै धरिकै अतिधीरज मेरो
हियोई। तद्यपि वा तनकी द्युति भेदकसारने भेद दुसार कियोई ॥ २५९ ॥ चल
अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥ नायिकाको बचन नायिकासौं ॥

सो० तोतनअवधिअनूप रूपलग्योसबजगतको ॥

मोहगलागेरूप दगनिलगीअतिझटपटी ॥ २६० ॥

यह नायिका के रूपसों नायक के नेत्रलगे हैं सो अपने नेत्रनकी तलफनि कहति है नायक को बचन नायिका सों ॥ सवैया ॥ सुन्दरताकी तुहीं परमावधि तैं रति की द्युति पायतुपेली। को रमणी रमणीपतिहूपुर राधिके तो सम होय झुहेली ॥ तो तनं सोहै लुनाईकी खानि लग्यो तिहूंलोकको रूप नबेली। त्यों तिह रूप लगे मम नैन लगी मम नैननि त्यों तलबेली ॥ २६० ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ आलंबन भाव ॥

दो० गलीअँधेरीसांकरीभोभटभेराआन ॥
परेपिछानेपरसपरदोऊपरसपिछान ॥ २६१ ॥

यह अँधेरी गली में जाभांति भेंटभई सो सखी सखीसों कहति है सो परस्परका पहिचानिबो दोउनको आगम मिलापहै यह व्यङ्ग नायिका परकीया ॥ सवैया ॥ रैन अँधेरी घने घुमड़े घन झूमि महातम पुञ्ज छये हैं। तैसी ये सांकरी लांबी गली भटभेर अचानक दोऊ भये हैं ॥ गातसों गातही लागतही जिय जानिगये लपटाय गये हैं। राधिका माधोजू माधोजू राधिका आपहीते पहिचान लये हैं ॥ २६१ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० उयोशरदराकाशशीकरतक्योंनचितचेत ॥
मनोमदनक्षितिपालकोछांहगीरछबिदेत ॥ २६२ ॥

यह मानवती सों सखीको बचन नायिका सों मान छुड़ायबे को प्रयोजन ॥ सवैया ॥ बलि आजु सुहानी हो राकाकी रैन बिहारसमै सुखसाजतहै। यह देखरी इन्दु उदोतभयो अरुणाई गहे छबिछाजतहै ॥ अवलोकत नाहिं रिसैल तियान को मान कहूं डरभाजतहै। यह मानो है मंजु महाक्षितिपालको मानिकछत्र बिराजत है ॥ २६२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० डिगतपानडिगलातगिरिलखिसबब्रजबेहाल ॥
कम्पकिशोरीदरशकेखरेलजायेलाल ॥ २६३ ॥

यह सात्विक भाव सखीको बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ लोपसुन्यो बलिकै मघवा तब कोपिकै मेघ सबै मुकलाये। गोधन कान्ह धर्यो तबहीं सबके उरके भय भूरि भगाये ॥ पानडरे डगुलात लख्यो गिरि लोगसबै ब्रजके अकुलाये। गोरी किशोरी निहारिकै कम्पति गात खरे नँदलाल लजाये ॥ २६३ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सुरतिनतालनतानकीउठ्योनसुरठहराय ॥
येरीरागबिगारिगोबैरीबोलसुनाय ॥ २६४ ॥

यह सात्त्विकभाव नायिका को बचन सखी सों अरु सखी को वचन नायिका सों होय तो लक्षिता सखी सखीहूसों कहै तो सम्भवहै परकीया ॥ सवैया ॥ लै कर बीन प्रवीनतिया सुरसाधिकै गानको ठाट ठयो है । द्वारपै आयकै ताहीसमै मनमोहन काहू की नाच लयो है ॥ तानकहूं अरु तालकहूं सुरतो कछु और ते और भयो है । बैरी अचानक बोलसुनायकै नंदको राग बिगारि गयो है॥२६४॥ शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३५ ॥

दो० ध्यानआनढिगप्राणपतिमुदितरहतिदिनराति ॥
मुलकिकँपतिपुलकतिपलकुपलकुपसीजतजाति२६५

यह नायिका बिरहिनी ध्यानकर मिलेसे तबहीं सात्त्विक भाव होत है सो सखी सखीसों कहति है सखी नायिकासों कहै तौहूं संभवहै ॥ सवैया ॥ वा हरिकें बिछुरे गति ऐसी भई सुबखान कहांलग कीजै । ध्यानही ध्यानमें चंदमुखी मिलि प्राणपिये रसरंग में भीजै ॥ रैनदिनारहै मोदभरी वहै कोहै बियोगिनि क्यों तन छीजै ॥ कम्पित है कबहूं ललकै कबहूं पुलकै कबहूंक पसीजै ॥ २६५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० स्वेदसलिलरोमांचकुशगहिदुलहीअरुनाथ ॥
हियोदियोसँगसाथकेहथलेवाहीहाथ ॥ २६६ ॥

यह बिवाह समय दोउन के अति सनेहके आधिक्यते सात्त्विकभाव भयो सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ मंडपमण्डल तीरथ साधिकै वेद बिधान सों दानदियो है । स्वेदभयो सोई नीर नयो जलहै फलकै कुशपुञ्ज लियो है ॥ मैन मुनिंद प्रयोग पढ्यो रति केलिहिये अभिलाष कियोहै। दोउनलौं अपनो अपनोयो हियोहथलेवाई हाथ दियो है॥२६६॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तच्योआंचअतिबिरहकीरहेप्रेमरसभीज ॥
नैननकेमगजलबहैहियोपसीजपसीज ॥२६७॥

यह नायिका अथवा नायक बियोगते अँसुवा बहतहैं तिनको उत्प्रेक्षा करत है सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ जादिनते ब्रजनागरिको मन नन्दकिशोर के नेहनह्यो है । आंच तच्यो बिरहानल की हितके रसमें अति भीजि रह्यो है ॥ तामें

तरंग उमंग बढ्यो तेहि ऊपर प्रेमानुराग रह्यो है। ताते पसीज पसीज हियो बिबि नैनन के मग नीर बह्यो है ॥ २६७ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मैंयहतोहीमेंलखी भक्तिअपूरबबाल ॥
लहिप्रसादमालाजुभौतनुकदम्बकीमाल ॥२६८॥

यह सात्त्विकभाव सखीको बचन नायकसों परकीया लक्षिता होय ॥ सवैया ॥ को रिझवारि न प्रेम पगी रँगलालन के रँग लाल भईहै । को न छकी छबि देखि गुपाल की को बनिता न बिहाल भई है ॥ मैं निरखी यह तो तन आज अपूरब भक्तिरसालभईहै । माल प्रसाद की पावतही सब देह कदंब की माल भई है ॥ २६८ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० नेकउतैउठिबैठियेकहारहेगहिगेहु ॥
छुटीजातनुहदीछिनुकमहदीसूकनदेहु ॥ २६९ ॥

यह नायक को देखि नायिकाको सात्त्विकभाव भयो है सो सखी नायक सों निवेदन करतिहै नायिकाहू सनेह के आधिक्यते नायकसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ आजलौं कैसेहूं जानिपरी न चली जबते रसरीतिचला । देखि तुम्हैं उमँग्यो अवहीं करपल्लव छोरन स्वेदजला ॥ बैठहु नेक इतै उठिकै उघरी यह आवति प्रेमकला । जातछुटी अवहीं नुहदी महदी छिनु सूकन देहु लला ॥ २६९ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० पहरतही गोरेहिगरे यौंदौरीद्युतिलाल ॥
मनोपरसिपुलकितभईमौलसिरीकीमाल ॥२७० ॥

यह नायक की माला स्पर्शते नायिकाके सात्त्विक भाव भयोहै सो सखी नायक सों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ सौरभ सहित चुनिचुनिकै कुसुमचारु अपने करन मन मोहन गुही बनाइ। मैंतो जाय दीन्हीं उनलीन्हीं अतिआदर सों पहिरी हियेमें प्राणप्यारी हित सरसाइ ॥ कृष्ण प्राणप्यारे के गोरेगरे ताहि छिन उपजी नवल द्युतिरही ऐसी छबि छाइ। मेरे जानि लाल मौलसिरीकी ललित माल पुलकितभई वाके तनको परसपाइ॥ २७० ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० हितकरतुमपठयोलगे याबिजनाकीबाय ॥
टलीतपतितनकीतऊ चलीपसीनोन्हाय ॥ २७१ ॥

यह नायक के बीजनाकी बयारलगे नायिका के सात्त्विक भाव भयो सो सखी

नायक सों कहति है ॥ सवैया ॥ मोरपखो उनको रुचिकै हितकै पठयो तुम प्यारे बिहारी । ताहि विलोकतही तियकी तनताप टरी उभँयो मद भारी ॥ हौंतो बिलोकि अचंभैरही अबलौं न कहूं गति ऐसी निहारी । वा बिजना की बयार लगे वह न्हाय पसीना के नीरमें नारी॥२७१॥मदकल अक्षर ३५ गुरु १३लघु२२॥

दो० सहितसनेहसकोचसुखस्वेदकंपमुसकानि ॥
प्रानपानकरिआपनेपानधरेमोपानि ॥ २७२ ॥

यह नायिकाको पानदेत नायिका के सात्त्विकभाव भयो अरुनायकके प्राण वा बिहँसनि को देखि वाके बशभये सो सखी सों नायक कहत है ॥ सवैया ॥ वा मृगलोचनि के सब अंग अनंग बिलास बसीकर हेरे । स्वेद सकोच सुने कबिकृष्ण सनेहभरे सुखपुंज घनेरे ॥ कंपतगात कछू मुसकात चढ़ायके भौंह बिलोचन फेरे । मो कर पान दयो हितसों उन प्रानलये अपने कर मेरे ॥ २७२॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० यहबसंतनखरीअरी गरमनशीतलबात ॥
कहिक्योंझलकेदेखियत पलकपसीजेगात॥२७३॥

यह सात्त्विकभाव देखि सखी नायकसों कहतिहै परकीया लक्षिता जानिये ॥ कवित्त ॥ सोहत सपान माहिं यह तो बसंतऋतु नाहिंनै गरम अरु शीरकनि अति है । कहैं कविकृष्ण बलि हमसों तो सांची कहि काहेते छबीली भई तेरी ऐसी गति है ॥ कबहूं तपत गात कबहूं पुलकहोत कबहूं पसीजआवै कबहूं कँपति है । जानिहैरी जानी हितसानी अरगानी रहि देखि दधिदानी प्रेम रस में पगाति है ॥ २७३ ॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० ऊंचेचितैसराहियतु गिरहकबूतरलेत ॥
झलकतदृगमुलकतबदनपुलकतहैकिहिहेत २७४

यह नायकको कबूतर देखि नायिकाको सात्त्विकभाव भयो सो सखी नायिका सों कहति है परकीया लक्षिता ॥ कवित्त ॥ अंबर में शोभासाजि उड़त कपोत येतो बाजीकरै रंगमें गिरह आछी लेतहै । तिन्हैं सबै कोऊ नैन ऊंचे कर चाहत है रीझरीझ सुघर सराहत सहेतहै ॥ चाहिबो सराहिबो बिसरिगयो तोहिं प्यारी देखतही देखिरही तेरे चितचेतहै । झलकत नैन मुलकत हैं अधर तेरे साँची अंगपुलकत सो तो किह हेतहै ॥ २७४ ॥ मंडूक अक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ ॥

दो० रहौंगुहीबेनीलखैं गुहिबेकेत्यौंनार ॥
लागेनीरचुचानजेनीठसुकायेबार ॥ २७५ ॥

यह नायक सखी बेष ह्वैकै नायिकाको शृङ्गार करनलाग्यो बेनी गुहति सात्विकभाव उपज्यो तब नायिकाने जान्यो सो नायकसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ गोपी को वेष बनाय गुपालजू श्रीवृषभानुसुता ढिग आये। हौं सजि जानत नीके शृँगार कहौ सुकरौं कहि बैन सुनाये ॥ बेनी गुहावत प्यारी कह्यो सुघराय इतै कितते तुम पाये। नीर चुचान लगे अबहीं सटकारे से बार जे नीठ सुकाये ॥ २७५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० राधाहरिहरिराधिका बनिआयेसंकेत ॥
दंपतिरतिबिपरीतसुखसहजसुरतहूलेत ॥ २७६ ॥

यह लीलाहावभाव रतिबिपरीत समय सखीसोंकहै ॥ कवित्त ॥ देखिबेको देह द्वै पै एकमन एकप्राण रूपशील बैसगुण चातुरी समेतहैं। जैसे दोऊ सांचे राँचे प्रकटीतरंग मन आजलौं न देखे कहौं ऐसे हियहेत हैं ॥ राधामाधो माधोराधा अदलबदल वेष बनि बनिआये केलि केलि के निकेतहैं। कहैं कबिकृष्ण दोऊसहज सुरतिकरि रति विपरीतके विविधसुखलेतहैं २७६॥ त्रिकलअक्षर ३९ गुरु९ लघु३०॥

दो० तजीशङ्कसकुचनिरहति बोलतअतिचकुबाकु ॥
दिनछनदाछाकीरहतिछुटतनछबिकीछाकु २७७॥

यहि नायिकाके छबिको गर्व है सो सखी सखी सों कहतिहै मदहाव जो नायक की छबिको छाकु सखी कहै तो लज्जिता होय ॥ सवैया ॥ कछु बूझत बातही ऊतर देत न लाइ टकी अनिमेष तकै। अरु कानिकरै न अलीनहूं की तजिलाज झरोखनि ह्वै उझकै ॥ सबशङ्क तजी सकुचै न हिये मुंह आवै सुचाकु कुचाकु बकै। रहै रैन दिना वृषभानुसुता छबि छाकछकी न छिनौ उछकै ॥ २७७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० रहीदहेंड़ीढिगधरी भरीमथनियांबारि ॥
फेरतकरउलटीरईनईबिलोवनहारि ॥ २७८ ॥

यह नायिका को विभ्रम देखि सखी नायकसों कहति है सखी सखीहूसों कहै तौहू संभवहै ॥ सवैया ॥ पास दहेंड़ी धरी ये रही जलसों भरिकै जु मथानी लई है। थंभसों नेतीं लपेटिदई उलटीकर फेरत तामें रई है ॥ मोहिं तौ लागत

नीको महा उर पूरण प्रेमकी रीति ठई है । सांवरी मूरतिकी रिझवारि नई तू बिलोचनदार भई है ॥ २७८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ कुट्टमित ॥

दो० लहिसूनेघरकरगहत दिखादिखीकीईठि ॥
गड़ीसुचितनाहींकरतकरललचौहींडीठि ॥२७९॥

यह सुरतांत रससमय नायिका की जो चेष्टा देखी सो नायक सखीसों कहतहै परकीया कुट्टमितहाव ॥ सवैया ॥ देखाही देखीकी ईठि अचानक डीठि परी अ- किली गृहमाहीं । साहसकै अपने उरमें अति मोहिग जाय लई गहि बाहीं ॥ लै सिसकी झहराई करै उन तीक्षणनैन किये चहुँवाहीं । कै ललचावनि डीठि करी वह नाहिं कियेते टरै अब नाहीं ॥ २७९ ॥ वारन अक्षर ३७ गुरु १० लघु २७ ॥

दो० हरषिनबोलीलखिललननिरखिअमिलसँगसाथ ॥
आंखिनहींमेंहँसिधस्योशीशहियेधरिहाथ ॥२८०॥

यह बोधकहाव नायिका प्रौढा परकीया नायक को देख चेष्टा बनी सो सखी सों सखी कहति है ॥ सवैया ॥ ऊखल साथमें देखि गुपालहिं गोपकुमारि करी चतुराई । बैन कछू न कहे मुखते लखि फूली मनो निधि नवनिधि पाई ॥ हाथ पस्यो हियपै पहिले पुनि शीशछुयो रसरीति बढाई । आंखिनहीं में कछू बिहँसी पियकी जियकी सबबात बताई ॥ २८० ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लखिगुरुजनबिचकमलसोंशीशछुवायोश्याम ॥
हरिसम्मुखकरिआरसीहियेलगाईबाम ॥२८१॥

यह नायिका परकीया प्रौढा दुहुँन जो चेष्टा कीन्हीं सो सखी सखी सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ आज दुहूं मिलिकै सजनी कछु सैननहीं समझ्यो समझायो । गोरी लखी गुरु लोगनमें सरसीरुह सों शिरश्याम छुवायो ॥ सो लखिकै बृषभानुसुता दियो ऊतर भेद न काहुन पायो । कृष्ण कहैं हरिके समुहें कर दर्पण बाम हिये सों लगायो ॥ २८१ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥ किलकिंचित् ॥

दो० सुनिपगधुनिचितईइतै न्हातदियेहीपीठि ॥
चकीझुकीसकुचीडरीहँसीलजीलीडीठि ॥ २८२ ॥

यह नायिका जासमय नायक ने देखी ता समयकी जो चेष्टा उनकी सो ना- यक सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ कामकी बामहूंते अभिराम लसै द्युति यौवन

की रससानी। न्हातही पीठ दिये अकिली सकिली धुनि मों पगकी पहिचानी॥ जा छबिसों चितई यहि ओर सुकैसेहूं मोपै न जातबखानी। चौंकीचकी सकुची डरपी करि डीठि लजोहीं झुकी मुसकानी॥२८२॥पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु२४॥

दो० बालमबारेसौतिके सुनिपरनारिबिहार॥
भौरसुअनरसारिसरलीरीझखीझइकबार॥२८३॥

यह नायककी बहु नायकता सुनिकै नायिकाके दुःखभयो सो सखी सखीसों कहति है॥ सवैया॥ बैठी सखी जुसमाजमें प्यारी शृंगार के साजन सों सरसानी। काहूकही तुवसौतिके ओसरे आनबधूके गयो दधिदानी॥ सो सुनिकै कवि कृष्णकहैं रहसी बिलखी हुलसी उकलानी। एकहीबेर लखी मृगलोचनि रीझि खिझी मुसकानी रिसानी॥ २८३॥ मराल अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० पतिरतिकीबतियांकही सखीलखीमुसकाय॥
करिकैसबैटलाटली अलीचलींसुखपाय॥२८४॥

यह नायिका नायकसों सुरतारंभ समयजानि सखी कछू मिसकरि उठिचलीं सखीको बचन सखीसों॥ सवैया॥ चौपरि खेल रची बनिता ब्रजराज बिलोकतही ललचानी। सैननमें कछु केलिकलोलकी बातकही मनमें न भुलानी॥ प्यारी अलीनकी ओर लखी हँसि यों रसभाव हिये सरसानी। देखि सबै सुखपाय चलीं अपने अपने गृहऊठि सुठानी॥ २८४॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु२८॥

दो० लखिदौरतपियकरकटुक बासछुड़ावनकाज॥
बरुनवनागाढ़ेदृगन रहीगुढ़ौकरिलाज॥२८५॥

सवैया॥ रतिमन्दिर में नवनागरि कान्ह मिले रसरङ्ग हिये ढरिकैं। दलुदौरत देख्यो तहां पियको करु बास छुड़ावनको अरिकैं॥ कविकृष्ण कहैं ठहरात तहां न सकी रहि धीरज को धरिकैं। गहि ओट घने बरुनी बनकी रही नैननलाज गुढ़ौ करिकैं॥ २८५॥ शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६॥

दो० सकुचिसुरतिआरंभही बिछुरीलाजलजाय॥
ढरकिढारढुरिढुरिगई ढीठभईढिगआय॥२८६॥

यह प्रौढ़ानायिकाकी सुरति सखी सखीसों कहति है॥ कबित्त॥ अतिअभिराम श्याम सङ्ग रतिमंदिर में बिहरति उमंग अनंग रङ्ग भरिकै। नखदान रददान चुंबन अधरपान आलिंगन करत अनेक भायभरिकै॥ सुरतके आरंभही लाजवती सखीभई

निपट लजाय जियगई कहूंढरिकै ॥ ढादसुहियेमें गहि निधरक है लगे आय ढा-
दीयई निपट ढिठाई ढीठढरिकै ॥ २८६ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० भौंहनत्रासतिमुंहनटति आंखिनसोंलपटाति ॥
ऐंचिछुटावतकरइँची आगेआवतिजाति॥२८७॥

यह सुरतारंभके समय प्रौढ़ा नायिकाकी जो चेष्टा है सो सखी सों कहतिहै ना-
यक सखीसों कहै तौहूं संभवहै ॥ कवित्त ॥ प्यारे पानि गह्यो आनि भौनमें अके-
ली जानि नैनन चढ़ायकै सलोनी सासेरातहै। नैननहँसोहीं डीठि राखतहै सौंहैं मु-
सकायकै लजोहीं अङ्ग अङ्ग ठहरात है॥ भयो मन भायो ज्यों सुरत सुखपायोहिये
आनंद बढ़ायो नेकनेकानि डरात है। झटकि छुटावै बांह मिल्यो चाहै मनमांह
करै नाहीं नाहीं याही मिस नियरातहै॥ २८७॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु२६॥

दो० दीपउजेरेहूंपतिहिं हरतिबसनरतिकाज ॥
रहीलपटछबिकीछुटन नेकोछुटीनलाज ॥२८८॥

यह सुरतवर्णन नायक के तनकी छबिको अधिक सखीको बचन सखी सों ॥
कवित्त ॥ तैसोही प्रकाश रतिमंदिरके दीपनको तैसोही समूह जगमगत रतनको। तै
सी ये सुधानिधि से मुखकी निरखि जोति मोहनके मनभाव उमँग्यो अतनको ॥
प्रीतमबिहारीलाल लेबेको सुरतसुनि निजकरबसन झटकि हर्‌यो तनको। छबि
की छटानहीं सों रही लपटाय राधे मानो उनहूंनकी छुटी न लाज तनको॥२८८॥
मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० यद्यपिनाहिंनहींनहीं बदनलगीजकजाति ॥
तदपिभौंहहांसीभरिन हांसीहियठहराति २८९॥

यह सुरतारंभ नायिका प्रौढ़ा सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ बैठी शृँगार
सजे ब्रजनारि अचानक मोहन आयो तहांहीं। पाणि गह्यो अवलोकि अकेली अ-
लौकिक केलि कला चितचाहीं ॥ यद्यपि वा नवनागरिके मुखलागी यहै जकना-
नन नाहीं। तद्यपि हांसीभरी भृकुटीन में बीसबिसि ठहरातहै नाहीं ॥ २८९ ॥
मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० चमकतमकहांसीससक मसकझपटलपटानि ॥
येजिहरतिसोरतिमुकतिऔरमुकतिअतिहानि २९०

यह सुरत वर्णन नायक को बचन अथवा कवि की उक्ति ॥ कवित्त ॥ किलकनि मुलकनि हेरनि हरनि चितु चमकनि झमकनि धनि मुसकानि है। लसनि मिलनि औरसभरी कसकनि ससक मसक झपटनि सुखदानि है ॥ लटकनि मटकनि दुरनि मुरनि कलि कुंजनि ललनि ललकनि लपटानि है। ऐसी रीति रतिसोई मुकति कहावति है मुकत कहावै और सोतो अतिहानि है ॥ २९० ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥ सुरतांत बर्णन ॥

दो० सकुचिसरकिप्रियनिकटतैं मुलकिकछुकतनतोरि ॥
करआंचरकी ओट कै जमुहानी मुंहमोरि ॥ २९१ ॥

यह सुरतान्त नायिका प्रौढ़ा सखीको बचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ केलिकला कुशल कुरंगनैनी पिकबैनी जाकीछबि पर सौति वारि एक कोरिकै। शयनसोपागी अनुरागी पतिसंगजागी मैनके बिलासन सों लेत चित चोरिकै ॥ सरकी सकुचि मनमोहन निकट नेक कछुक मुलकि अंगरानी तनतोरिकै। शोभा यह मोपै क्योंहूं जात न बखानी कर अंचरकी ओट जमुहानी मुंह मोरिकै ॥ २९१ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० लखिलखिअँखियांअधखुलन अंगमोरअँगराइ ॥
आधिकउठिलेटतिलटकि आलसभरीजँभाइ २९२

यह सुरतान्त नायिका प्रौढ़ा सखीको बचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ रैन सुख पागी अनुरागी हरिसंगजागी शोभा सरसानी अरसानी जमुहात है । बिथुरी अलक झुकी आवत पलक मनमथकी झलक अतिरस बरसात है ॥ ललित कपोल पै लसत नीकी पीकलीक दोऊ भुजजोर मुँह मोर जमुहात है। अधखुली आंखिन सों आली तन अवलोकि आधीउठि सेजही लटकि लटि जात है ॥ २९२ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० नीठि नीठि उठिबैठिहूं प्योप्यारीपरभात ॥
दोऊनींदभरेखरे गरेलागिगिरजात ॥ २९३ ॥

यह सुरतान्त नायिका सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ वृषभानुलली ब्रजराजलला रतिसंगरमें निशि संगजगे । कवि कृष्ण कहैं कुल कामकला बहु भाय बिलास हिये उमँगे ॥ उठिबैठिनि सेजपै नीठि तऊ उठिपै न सकैं अति प्रेम पगे। अति नींद भरे सरसातखरे बहुरयों गिरजात गरेही लगे ॥ २९३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० रँगीसुरतरँगपियहिये लगीजगीसबराति ॥
पैंड़पैंड़परठठकि कै ऐंड़भरी ऐंड़ाति ॥ २९४ ॥

यह सुरतान्त सखीको बचन सखीसों जो सखी नायकसों कहै तो लज्जिता होय ॥ सवैया ॥ सब रैन जगी हरिकंठलगी रतिरंगरँगी अलसात खरी है। डग एक चलै फिरिकै चितवै मुरिकै अँगरात मरोर भरी है ॥ बिथुरी अलकैं झलकैं श्रमवारि झुकी पलकैं मुखढार ढरी है। लगि पीककी लीक कपोलन नीक लसै अतिसारी सलोट परी है ॥ २९४ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० योंदलमलियतनिरदई दईकुसुमसोंगात ॥
करधरदेखोधरधरा उरको अज्योंनजात ॥ २९५ ॥

यह नायिका सुरत समय मर्दित अति बिकल भई है सो सखी नायकसों कहति है ॥ कवित्त ॥ सुख है सखीन बिचदैके मोह धायकै खवाय कछु चाइ बर कीनी बसुबसु है। कोमल मृणालिकासी मल्लिकाकी मालिकासी बालिका जु डाहीं मींड़ि मानसकिपसु है ॥ जानेन बिभाति भयो कैसे बसुनेको बात देखो आय गात जातभयो किधौं असुहै। चित्रसी जुराखी यह चित्रनी बिचित्र गति कहौ नथेरसिकधौं यामें कौन रसुहै ॥ २९५ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लहिरतिसुखलगियेहिये लखीलजोंहींनीठि ॥
खुलतनमोमनबँधिरहीवहैअधखुलीडीठि ॥ २९६ ॥

यह सुरतान्त नायिका को वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ केलिकला सुखझेलि प्रभात लसी पर्यंकपै राधिका प्यारी। अंकलगी तऊ लाजपगी रही नारि निवाय महा छबिधारी। सोहैंचितैवेको मोहु हठ्यो तब नैंसक भौंह उचाय निहारी। सोवनिदी अंखियां अधखोली चितौन हियेते टरै नहीं टारी ॥ २९६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० बिनतीरतिबिपरीतकी करीपरसपियपाँय ॥
हँसिअनबोलेहीदियो ऊतरदियो बताय ॥ २९७ ॥

यह रतिविपरीत है सो सखी को बचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ केलिकला कुशल कुरंगनयनीके अंग अंगकी निकाई द्युतिरतिकी रती करी। बाहिरतअंतर बिहार बिहरे बिबिध मदन महीपकी बिभूति बढ़ती करी ॥ तैहीं रतिमंदिर में राधे के परसि पग रति बिपरीत की पियारे बिनती करी। प्यारी मुसकाई अ-

न बोलेही बतायो दिया मीतमके जीकी चाह याही में सही करी ॥ २९७ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पस्योजोरबिपरीतरतिरमीसुरतरणधीर ॥
करतकुलाहलकिंकिणी गह्योमौनमंजीर॥२९८॥

यह बिपरीत बर्णन नायिका प्रौढा सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ श्री बृषभानुसुता तनयौबन ज्योति जगे रति लाज न लागी । भौंहैं बिलासनि हासनिकै हरिसाजन को सुख साजन लागी । धीरमहा रतिसंगर में बिपरीत रची रतिराजन लागी । मौन गह्यो बिछियान तहीं रसना रसहीरस बाजन लागी ॥ २९८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मेरीबूझतबाततू कतबहरावतबाल ॥
जगजानीबिपरीतरतिलखिबिंदुलीपियभाल२९९

यह नायिका प्रौढा रतिबिपरीत कीनी सखीसों दुरावतिहै सो प्रवीण सखीजानिलई सो नायक सों कहति है ॥ सवैया ॥ हौं हितूकै बलबूझतहूं तू बहरावत बातहीं मेरी । पून्यौंको चंद उदोत करे तब कैसेदबै किये ओट अँधेरी ॥ तैं हरिसों बिपरीत करी रति क्यों दुरिहै अबतो हमहेरी । नीकी है जानि परी सबको पिय भाल लखी बिंदुली तियतेरी ॥ २९९ ॥ मच्छ अक्षर४१ गुरु ७ लघु ३४॥

दो० रमनिकह्योहठिरमनसोंरतिबिपरीतबिलास ॥
चितईकरलोचनसतरसगरबसलजसहास३००॥

यह नायक ने रतिबिपरीत की बात सुनाई चितवनमें चेष्टा कीनी सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ बृषभानुसुता नँदनन्दलला रसकेलि कलान प्रबीणखरे । रतिमंदिर में अतिप्रेमपगे रतिकंत बिलासके रंगढरे ॥ रतिकी बिपरीतकरैं रमनी हँसि यों जब प्यारे निहोरे करे । तब प्यारी किये लखि नैन तिरीछे गुमान भरी अरु लाज भरे ॥ ३०० ॥ मच्छअक्षर ४१ गुरु ११ लघु ३० ॥ सखीन को लखिबो ॥

दो० पटकीढिगकतढांपियत सोहतसुमगसुभेख ॥
हदरदछदछबिदेतइ हँसै दरदकी रेख ॥ ३०१॥

यह सुरति को चिह्न नायिका दुरावति है सो सखी नायिका सों कहति है ॥ सवैया ॥ आज भट्टरतिरंग के मंदिर तू मनमोहन के सँगजागी । केलि बिलासनि

कै बड़िभागिनि तैं रिझयो फललै अनुरागी ॥ ढांकत क्यों पटकी ढिगसौं अतिसोहति चारुप्रभान सौं पागी । देत महाछवि की हृदयों यह रेख रदच्छद की सद लागी ॥ ३०१ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० आजकछूऔरै भये ठयेनये ठिकठैन ॥
चितकेहितकेचुगलयेनितकेहोहिंननैन ॥३०२॥

यह नायिकाके नेत्र सुरत चमकत देखि सखी नायक सौं कहै तो लज्जिता होय नायिकासौं कहै तो खंडिता ॥ सवैया ॥ आलसके रसमें थिथके रँग लालके रंग सुरंग भये हैं । देतकहै चितके हितकी चुगली ठिकठैन नयेई ठये हैं ॥ निंदत हैं अरविंदप्रभा अनुराग पराग में पागिगये हैं। होहिं न ये नितके सजनी दृग आज अपूरब ओप छये हैं ॥ ३०२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२लघु २४ ॥

दो० सुरतदुराईदुरतिनहिं प्रकटकरतरतिरूप ॥
छुटेपीक औरै उठे लाली ओठअनूप ॥ ३०३ ॥

यह सुरत के चिह्न देखि सखी नायक सौं कहति है परकीया जो नायिका सखी सौं कहै तो अन्यसंभोग दुःखिताहोय ॥ सवैया ॥ भूषणचारु बनायसजे कच फूलगुहे रुचि आइबनाई । होत कहापलटे पटराधिके लीक कपोलन पोंछिकै आई ॥ देतकहै रतिरंगकी भांति अनूपमकांति दुरै न दुराई । पानकी पीक छुटै अधरानपै और कछू प्रगटी अरुणाई ॥ ३०३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० मोसोंमिलवतिचातुरी तूनहिंभानतभेउ ॥
कहेदेतयहप्रगटहीं प्रगट्यो पूसपसेउ ॥३०४॥

यह नायिका स्वेद लखि सखी सुरत भयो जानि कहतिहै लज्जिता जानिये ॥ सवैया ॥ आजपगी सुखपुंज में प्यारी निकुंज में केलिकरी मनभाई । पीक गई छुटि ओठनपै प्रगटी मुखमंडलपै अरुणाई ॥ भेदकी बात कहै किन भामिनि मोसों चलावत क्यों चतुराई । तोतन देतकहै प्रगटै यह पूसके मास पसेउमें न्हाई ॥ ३०४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० नटिनशीशसबिताभईलुटीसुखनकीमोट ॥
चुपकरिये चारीकरै सारी परी सरोट ॥ ३०५ ॥

यह नायिका लज्जिता मरगजी सारी देखि सखी नायिकासों कहतिहै ॥ कवित्त॥

रसकी उमड़भरी रङ्गभरी छोहति है अङ्गकी शिथिल द्युति अमिजल छाई है। झूमति झुकति अंगराति जमुहाति मुसुकाति अरसाति सरसात्यों सुनिकाई है॥ मोटेलूटी सुखकी मगटभई तेरिशीश क्यों तू मुकरति मनमथ की दुहाई है। चुप क्यों न करै चलि येई तो करत चोरी भेतू आनसारी में सरोट पारिआई है॥ ३०५॥ मराल अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० मोहिंकरतकतबावरी कियेदुरावदुरैन॥
कहेदेतरँगरातके रँगनिचुरतसेनैन॥३०६॥

यह नायिका के नेत्र देखि सखी कहै तो लक्षिताहोय जो नायक के विद्यमान नायकको सखी सों नायिका कहै तो खंडिता होय॥ कवित्त॥ सुरति के चिह्न चतुराईसों लुकावतन भूषण बनायसजे बसन तुरत है। कृष्ण प्राणप्यारे के सनेह सरसानी ताते गातअरसाने रस उमँगि दुरतहै॥ काहेको सयानी मोहिं बावरी करत अब कियो तैं दुराव काहि कैसेकै दुरत है। मगट पुकारे रंग रातके कहत येतो लोचन युगल मानो रंग निचुरतहै॥३०६॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० लाजगरबआलसउमँग भरेनैनमुसकात॥
रातरमीरतिदेतकहि औरैप्रभाप्रभात॥३०७॥

यह नेत्रन को भावदेखि सखी नायकसों कहै तो लक्षिताहोय जो नायिका नायक सों कहै तो खण्डिताहोय॥ कवित्त॥ सारस तें सरस लसत भरे आरस महारस मगनहेरि हिये हरिलेत हैं। लालडोरे राजतहैं और उपराजत हैं फूले मुसकातहैं निकाई के निकेतहैं॥ मैनकी उमंगभरे यौवन के रंगभरे लाज की तरंग भरे गरब समेत हैं। शैनसुखपागे मिसजागे दृगतेरे बाम रात रमिरतकी प्रभात कहे देतहैं॥ ३०७॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० कोटियतनकीजैतऊ नागरिनेहदुरैन॥
कहेदेतचितचीकनो नईरुखाईनैन॥३०८॥

यह नेत्रदेखि सखी नायिका सों कहै लक्षिता होय॥ सवैया॥ तो मनमोहन सों मिलयों मनमें तबहीं छबिही लखिपाई। बूझत तोहिं हिये हितु मानिकै मासों चलावत तू चतुराई॥ कोटि उपाय करै किन नागरि नेहकी डीठि दुरै न दुराई। नैनन मांझ रुखाई नई यह देत कहे चितकी चिकनाई॥ ३०८॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० सहीरँगीलेरतिजगेजगीपगीसुखचैन ॥
अलसौंहैंसौंहँकियेकहैँहँसौंहैँनैन ॥ ३०९ ॥

यह नायिकाके नेत्रन को भाव देखि सखी कहै लक्षिता ॥ सवैया ॥ मोसों छबीली छिपाव कहा परतच्छही छाती सों छैल लगाई हौ। देवकहै अलसौंहीं हँसौंहींसी आई रिसौंहीं हिये उमँगाईहौ ॥ प्यारे पिया पर्य्यंकपै पारिकै प्रेम पियूष पिवाय पगाईहौ। कामकल्लोलनि कामिनि आजुकी यामिनि चारहूं याम जगाई हौ ॥ ३०९ ॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु७ लघु ३४ ॥ युगल दर्शन ॥

दो० नितप्रतिएकतहीरहत बैसबरनमनएक ॥
चहियतयुगलकिशोरलखिलोचनयुगलअनेक ३१०

यह युगलकी शोभा अरु दोउन के हितकी आधिक्य सखी को बचन सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ नित श्रीवृषभानुसुता नँदलाल बिराजतहैं छबि पुंज छये। कबि कृष्ण कहैं मनशील बहिक्रम बातरताइक रंगरये ॥ सुख देखि सिहात सबै सजनी बिधिसों बिनवैं अभिलाषभये। यह रूप बिलोकिबेको तनमें प्रतिरोमनि लोचन क्यों न भये ॥ ३१० ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० मिलिपरछाहींजोन्हसों रहेदुहुनकेगात ॥
हरिराधाइकसंगही चलेगलिनमेंजात ॥ ३११ ॥

यह दोउनको मिलबो गली में जात एकही जानि परत हैं ॥ कवित्त ॥ दोऊ रसभीने रूपरीझे तरुणाई भरे दुहुनके नेह उमँगत गातगात हैं। दंपति करति चतुराई के चरित्रचारु औरकौन जाने ये प्रवीननकी बात हैं ॥ जहां परछाहीं तहां प्यारी यों बिलोकियति जोन्हको प्रकाश तहां कान्हहीं लखातहैं। कहैं कबिकृष्ण कुञ्जकेलिको निशङ्कभये दोऊ एक साथही गली में चले जात हैं॥ ३११ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० तजितीरथहरिराधिका तनद्युतिकरिअनुराग ॥
जेहिब्रजकेलिनिकुंजमगपगपगहोतप्रयाग ३१२॥

यह युगल बर्णन ॥ कवित्त ॥ तीरथनि सटकत काहेको तू भटकत क्यों अटकत ब्रज शोभाकी हिलंगमें। राधाबनमाली की सरस गोर श्याम द्युति सकल निकाई को लसत सारसंग में ॥ तासों करि प्रीति यह निगम प्रसिद्ध बिधि सिद्धि बिधि शंकरसे तिनहू ते अंगमैं। डगडग प्रति होत प्रगट प्रयाग पग

जिनके परतिकेलि कुंजनके मगमें ॥ ३१२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु२०॥

दो० उनकोहितउनहींबनै कोऊकरोअनेक ॥
फिरतकोकगोलकभयो देहदुहूंजिवएक ॥३१३॥

यहु दोउन के हितकी अधिकाई सखी सखी सों कहति है ॥ कबित्त ॥ आधे आधे कहिवेकों रुचि माधो लहिवे को आधौ छिन राधातें न माधो बिछुरत हैं। ऐसो कछू नेम गह्यो मनमें न भेदरह्यो दुहुन के प्रेम बढ्यो कह्यो न परतहै ॥ पलक में आय इत पलक में जाय उत पलक नचाय नउ विश्रासी धरत हैं। राजाराम मेरे जान दुहूंतन एकप्रान काग दृगपूतरीन फिरबो करत है ॥ ३१३ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० वियसौतिनदेखतदई अपनेहियसोंलाल ॥
फिरतसबनमेंडहडही उहोंमरगजीमाल ॥३१४॥

यह नायिका की मालापाय बहुत प्रसन्नभईहै सो सखी नायक सों कहति है प्रेम गर्विता होय ॥ कवित्त ॥ सौतिके लखत मनभावन पयाकै दीनी उरतेउतारि परगटकीनी रतिहै। तबहीं ते रहसति बिहँसाति हुलसति बिलसति लसत गुमान भरी अतिहैं ॥ मनमें मुदित फूली तनमें समात नाहिं चल चित अत अनुराग उ-भलतिहै। मरगजीमाला उही उर धरैं बाला वह डहडही आलिन के झुण्ड में फिरति है ॥ ३१४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० अपनेकरगहिआपही हियपहिराईलाल ॥
नीलसिरीऔरौचढ़ी बोलसिरीकीमाल ॥ ३१५॥

यह नायक ने अपने हाथ बनाय बोलसिरीकी माला पहिराई ताहि पाइ याकी शोभा अधिकभई सो सखी नायकसों कहति ॥ सवैया ॥ आपने हाथन बीनिके फूल बनाई गुही मनलाय कन्हाई। माल सुबोलसिरी की रसाल सुगन्ध भरी अतिही छविछाई ॥ आलिन के गनमें लसिकै हँसिकै हठि प्यारी हिये पहि-राई। ओपअनूप लही तरुनी बरनी न परै अनुराग निकाई ॥३१५॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० तीजपरबसौतिनसजै भूषनबसनशरीर ॥
सबैमरगजैंमुहुकरी उहीमरगजेचीर ॥ ३१६ ॥

यहनायिका प्रेमगर्विता मरगजेचीर ताको गर्वभयो ताते शृङ्गार न कियो सो

सखी को बचन सखीसों कहति है ॥ कबित्त ॥ सौतिन हुलसि गनगौरिकी परब साधि भूषणवसन बहुभांतिन सुधारे हैं । तिलकतमोरबेंदी बेसर तरयोना साजि अंजनसों आंजै चारु लोचन अन्यारे हैं॥कृष्ण प्राणप्यारे के रिझायबे को होड़ी होड़ा चपल कटाक्ष हाइभाइनसों ढारेहैं । उहीं एकराति मरगजे चीरहीसों सबही के नीके मुख अति फीके करिडारे हैं ॥३१६॥ मदकल अक्षर३५गुरु१३लघु२२॥

दो० औरैगतिऔरैबचन भयोबदनरँगऔर ॥
द्योसकतेंपियचितचढ़ी कहैचढ़्योहैत्यौर३१७॥

यह नायिका नायकके प्रेमगर्वितै काहूको मन ध्यानतनाहीं सो सखी सखी सों कहै ॥ सवैया ॥ औरही चाल बिलोकन औरही देखो यों आननहूरँग औरही । बोलत आनही भांति गुमानसों ज्यों निधनी निधि पाइकै बौरही ॥ बूझेहू बातके ऊतर देत न हीठिकहूं ठहरात न ठौरही । द्वैकदिनाते चढ़ी हरिके चित प्यारी चढ़ायेही राखत त्यौरही ॥ ३१७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० कियोजुचिबुकउठायकै कंपितकरभरतार ॥
टेढ़ीयेटेढ़ीफिरत टेढ़ैतिलकलिलार ॥ ३१८ ॥

सवैया ॥ ठोढ़ी उठायकरयो चितचायसों नंदलला अतिही अनुरागे । भाल लगावतही अंगुरीकर कम्पभयो अतिहेत सों पागे ॥ आने न आने मनै तबतें न गनै कछु आपने प्रेम के आगे । टेढ़ीये टेढ़ी फिरै मृगलोचनि टेढ़ोई टीको लिलार पै लागे ॥ ३१८ ॥ शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

दो० सुघरसौतिबसपियसुनतदुलहिनिदुगुनहुलास ॥
लखीसखिनसोंडीठकरिसगरबसलजसहास३१९

यह नायिका गुनगर्विता आपने गुनके गुमानते सौतिनके आगमको दुखनाहीं मानति प्रसन्नभई सो सखी तन चितवति है सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ रूपकी राशि सखीन समाज में सोहै शृंगार सजे ब्रजनारी । काहूकही सुघरायन कै तुवसौतिनैलीनों रिझाय बिहारी ॥ यौंसुनिकै अतिही हुलसी गुन चातुरी की परमावधि प्यारी । लाज गुमानभरी मुसकाय कै रंचक डीठि अली तनडारी ॥ ३१९ ॥ बारनअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० दुसहसौतिसालीसुहिय गनततननाहिंबिहाय ॥

धरेरूपगुनकोगरब फिरतअछेहउछाय ॥ ३२० ॥

यह नायिका आपरूप के गुनके गर्वतें और को चितमें आनतनाहीं सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ नाह के ब्याहमें प्यारी अछेह उछाहभरी पटभूषण ठानत । जानत हैं निहचै अपने जियको बनिता करिहै नइहांनत ॥ रूपके यौवन के गुनके अभिमानतें आनही नाम न आनत । यद्यपि सौतियासाल तऊ उरमैं बहै ती न रती दुखमानत ॥ ३२० ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० खलबढ़ईबलकरिथके कटैनकुबतिकुठार ॥
आलबालउरझालरी खरीप्रेमतरुडार ॥ ३२१ ॥

यह प्रेमकी दृढ़ता सखी सों नायिका कहै अथवा नायककहै ॥ कवित्त ॥ देखत ही मूरति मधुर मनमोहन की नैननके मिसैं मिल्यो मन अवदात है । आलबाल उरतें प्रगटभयो प्रेमतरु दिनादिन झालरतु अतिसरसातहै ॥ ताहि दूरिकरबेको कितने खलन लागि कुबति कुठार माहि कीनो उतपात है । कहै कविकृष्ण सवैयाके अति बलकरि नेक न घटत त्यों त्यों दृढ़ होत जात है ॥ ३२१ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० करतजातजेतिकघटनि बढ़िरससरितासोतु ॥
आलबालउरप्रेमतरु तितोतितोदृढ़होतु ३२२ ॥

यह सनेह के अंगमें दृढ़ता नायिकाकी अथवा नायककी वचन सखीसों सखी-नायिकाहू सों कहै तो संभव है ॥ कवित्त ॥ आलबाल उरमें मनोज बयो नेहबीज ताते भयो आली प्रेम अंकुर उदोतहै । सुरति सलिल सींच्यो याहीते उमंग उठ्यो दुहूनके प्रेम बढ़यो कढ्यो न परत है ॥ पलक में आय इत पलक में जाय उत पलक नचाय नटविद्या सी धरत है । राजाराम मेरेजान दुहूंतन एक प्रान कागदृग पूतरीन फिरबो करत है ॥ ३२२ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० सोहृदयोमेरेभयो रहतजुजियमिलसाथ ॥
सोमनबांधनसौंपिये पियसौतिनकेहाथ ॥ ३२३ ॥

यह नायिका प्रौढ़ा उराहनो नायिका वचन ॥ सवैया ॥ जो मन मोहिं मयाके दियो तुम तो नियसों मिलिकै रसलीजै । भेदरखो न ऋरुकर सुधायमें प्रेमपियूष स-कामिलिपीजै ॥ मैं अपनो करजान्यो यही अब अंतरहोत छिनै छिन छीजै । सोमन

जोरावरी करिमोहन सौतिनके कर बांधनदीजै ॥ ३२३ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० भयेबटाऊनेहतजि बादबकतबेकाज ॥
अबअलिदेतउराहनोउरउपजतअतिलाज ३२४॥

यह नायिका परकीया प्रौढा उराहनो नायक के विद्यमान नायिका सखी सौं कहति है ॥ सवैया ॥ नैननसों तनसों मनसों रहनेई मिले त्यहिते सुखसाजनि । भूलिगई सब वे बतियां हितपुञ्जन की बहुभांति बिराजनि ॥ ये तजि नेह बटाऊ भये अब बाद बकैं सजनी बिनकाजनि । देत उराहनो ऐसेन को अपने उरही चपियै अतिलाजनि ॥ ३२४ ॥ मदकल अक्षर ३० गुरु ८ लघु २२ ॥

दो० तोहींनिर्मोहीलग्यो मोहीयहैसुभाउ ॥
अनआयेआवैनहीं आयेआवतआउ ॥ ३२५ ॥

यह नायिका परकीया प्रौढा है नायक की निठुरताई अपने हृदय की आसक्ति उराहनो देकर प्रकट करतहै नायिकाको बचन नायकसों ॥ कबित्त ॥ नेह भरे नैननकी जबते नजर मिली तबहीं ते चितको लगायो अति चाव है । मिलत मिलत मन हिलमिल एक भयो परयो प्रेमफंदको अनोखो उरझाव है ॥ कहतसकत तेरो हियो निरमोही अति मेरो हियोगह्यो कछू ऐसोई सुभाव है । तेरे अनआये अनआवै है रहत यह तेरे आये आयजात प्यारो तन आव है ॥ ३२५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० ललनसलोनेअरुरहैं अतिसनेहसोंपागि ॥
तनककचाईदेतदुख सूरनलोंमुंहलागि ॥ ३२६ ॥

यह नायिका प्रौढा है नायक अंतःकरणमें कछु कपट जानि उरहने में प्रगटकरतहै नायिकाको बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ नेकचितै चितचोरतहौ उर जोरतहौ अनुराग सवाई । रावरे प्रेम प्रबंधनकी जितही तितही सुनियै चरचाई ॥ रूपसलोनेसों नेहपग्यो हरिप्रीति कि रंगमें बुद्धिरचाई । सूरनलौं मुंहलागितऊ दुख देत लला यह नेक कचाई॥ ३२६ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० आपदयोमनफेरलै पलटैंदीनीपीठि ॥
कौनचालयहरावरी लाललुकावतडीठि ॥३२७॥

यह नायिका प्रौढा उरहनो देत है नायिका को बचन नायकसों ॥ सवैया ॥

नंदलाल उरझाय हियो अब देखबे को तरसावतहौ। अब तो हमको यह जानिपरी यह लाज इतैनहिं आवतहौ॥ तुम मोहिंदयो अपनो मन आपही फेरलै क्यों शिरनावतहौ। अवतौ पलटे इतपीठिदई हरिकाहे को दीठि लुकावतहौ॥ ३२७॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० बिरहबिथाजलपरसिबिनुबसियतमोहियताल॥
कछुजानतजलथंभबिधिदुरयोधनलौंलाल ३२८॥

यह नायिका प्रौढ़ा उराहनो नायिकाको बचन नायकसों॥ सवैया॥ हरिमो हिय प्रेम सरोवर में बसिवो निशिवासर ठानतहौ। कवि कृष्णकहैं अपने उरको हमसों पिय भेद न भानतहौ॥ बिरहारु बिथा नहिं नेकु तुम्हैं पै हमैं अतिही दुख दानतहौ। कछु जानिपरी दुरयोधनलौं जलथंभन की बिधि जानतहौ॥ ३२८॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० दक्षिणपियह्वैबामबसि बिसराईतियआन॥
एकैबासरकैबिरह लागेबरसबिहान॥ ३२९॥

यह नायिका प्रौढ़ा सुनायकको उराहनो देतहै दक्षिणपिय या पदतें चतुरपिय संबोधन जानिये जो दक्षिण नायक न बनै॥ कवित्त॥ रसरीति नागरहौ चातुरी के सागरहौ कोटिकाम कलानिधि उपमा न परसै। सब सुख देतहौ निकाई के निकेतहौ तुम्हैं देखतही प्रीति सबही के उरसरसै॥ दक्षिण सनेहहरि ऐसेभये बाम बसि बिसराई और तिय देखिबेकी तरसैं। कहैं कविकृष्ण एकभौनबसि रहै हम ध्यान लगीं बिरह बिहानलागी बरसै॥ ३२९॥ सुरन अक्षर ४६ गुरु २ लघु ४४॥

दो०फिरतजुअटकतकटनाबिन रसिकसरसनखियाल॥
अनंतअनतनितनितहिततनुचितसकुचतनहिंलाल ३३०

यह नायिका प्रौढ़ा उराहनो नायिकाको बचन नायकसों॥ कवित्त॥ कृष्णप्राण प्यारे जग जानत तिहारे गुन गूढ़न उघारे ऐसी ढरनिढरतहौ। सबही को भावतहौ रसिक कहावतपै रसन रसीलेलाल ख्यालसे करतहौ॥ अटकत फिरत लगनबिन ठौरठौर प्रेमपन सांचो कबहूँन उघरतहौ। अनत अनत नित कीजतनबलनेह रंचकहू जियमें न सकुच भरतहौ॥ ३३०॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० सुभरभर्योतुवअगुनकन नुपक्योकुचतकुचाल॥

क्योंधौंदारयोंज्योंहियोदरकतनाहिंनलाल३३१॥

सवैया ॥ मो उरमें अनुरागके फूलतें प्रीति प्रतीति कली प्रकटी ज्यों। रावरे औगुन के कनका छलके बकुला संग भूरि भरेत्यों ॥ बंचकताई की बातनसों कवि कृष्ण कहैं परिपक्क भयेयों। आवत मोहिं परेखो यहै अब दाड़िम ज्यों दरकै न हियो क्यों ॥ ३३१ ॥ कच्छअक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० सदनसदनकेफिरनकी सघनछुटैहरिराय ॥
रुचैतितैबिहरतफिरौकितबिहरतउरआय३३२॥

यह नायिका प्रौढ़ाउराहनो नायिका को बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ डोलत लाल घनेघर झांकत प्रेमकोआंक कहूं न उघारौ। जानिपरे अबतौ चकसौ उरही करिहैं हम ध्यान तिहारौ ॥ बानपरी सु न क्योंहूं छुटै मनु मानै तहीं रुचि मान पधारौ। भाव न सेज विहार बिहारी यों तो कितयों इत आयबिहारौ ॥ ३३२॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥ स्वाधीनपतिका ॥

दो० छिनकुचलतठठकतछिनकु भुजप्रीतमगलडारि॥
चढ़ीअटादेखतघटा बीजुछटासीनारि ॥३३३॥

यह संयोग शृंगार नायका स्वाधीनपतिका सखी को बचन सखीसों कहति है॥ कबित्त ॥ सावनके मास मनभावनके सङ्गप्यारी अटापर ठाढी भई घटा अंधियारी में। दामिनी के धोखे चकचौंधे दृग कबिनाथ छबिनसों मुरि दुरै पिय अङ्कवारी मैं॥ कोटिरति वारौं ऐसी राधाजूके रूपपर रंभा रंक कहा शङ्कशचीकै निहारी मैं। पागिरहीरस जागिरही जोति लालनि में नेह भीजो देह मेहभीजी सेतसारी मैं॥ ३३३ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० टुनिहाईसबटोलमें कहीजुसौतिकहाय ॥
सुतेऐंचिप्योआपत्योंकरीअदोखिलआय३३४॥

यह नायिका स्वाधीनपतिका सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ रात दिना छकि याही के धाम परयो रसमें रहतो सुखदाई। पासपरोस बके कहतीं यह बीस बिसे तियहै टुनिहाई ॥ तू जबते गुनरूपकी राशि सुशील सुहागिल गौनेही आई। प्राणपती अपने बशकै तें भलीकरी सौतिकी छूतिबहाई॥ ३३४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० तोपरवारौंउरबशी सुनराधिकेसुजान ॥

तूमोहनकेउरबसी ह्वैउरबसीसमान ॥ ३३५ ॥

यह नायिका स्वाधीनपतिका सखी को बचन नायिकासों ॥ कबित्त ॥ रूपकी उजारी वृषभानुकी दुलारी राधे तेरीये निकाई हेरि सौति सब हारी है। तेरेगुण गायबेको तेरेई रिझयबेको तेरी प्रीतिहीको पनुगह्यो गिरिधारीहै ॥ तेरोनाम तेरो ध्यान तेरोही हिये में धरे तेरो रसबस उनगायहू बिसारी है। तूही उरबसी ह्वैकै उरबसी मोहनके तेरी छबि ऊपर को उरबसी वारी है ॥ ३३५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० तूमोहनमनगड़िरही गाड़गिढ़ीनिगवालि ॥
उठतसदानटसालसों सौतिनकेउरसालि॥३३६॥

यह नायिका स्वाधीनपतिका सखीको बचन नायिकासों ॥ सवैया ॥ खीन करीकटि पीनसेपेट कठोर उठे कुच कोकिल बैनी। कंबुसो कण्ठ कलाधरसो मुख कोटि कटाक्षन की अतिपैनी ॥ तू मनमोहन के मन ग्वालिरही गडिकेलिकला सुख दैनी। सौतिन के उरमांझ सदा नटसाल ज्यों सालत है मृगनैनी ॥ ३३६ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० नभलालीचालीनिशा घटकालीधुनिकीन ॥
रतिपालीबालीअनत आयेबनमालीन ॥ ३३७॥

यह नायिका उत्कंठिता परकीया नायिकाको बचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ आज मनमोहन को मग निरखत मेरे पलक न लागे प्रीति उरतैं न हाली है। भई नभ लाली देखि फीकी परी नखताली सुनि पतिधुनि चिटकाली निशाचालीहै॥ काहूरवनी की लखि मदगज चाली तासों जानियतिरीझि बनमाली रतिपाली है। कहा कहौं आली इत मदन बिपति घाली खालीसेजभई जैसी आली बि-करालो है ॥ ३३७ ॥ बासक शय्या ॥

दो० झुकिझुकिझुपकोहैंपलन फिरफिरजुरिजमुहाय॥
बींदिपियागमनींदमिसिदींसबअलिनउठाय३३८॥

यह नायिका परकीया बासक शय्या सखीको बचन सखीसों क्रियाबिदग्धा हू संभव है ॥ सवैया ॥ जानि समै पिय आगम को चतुराई करी चित चाह के चाह कै। सैंकरि आधिक मूंदिकै आंख झुकीसी करी पलकैं चपलायकै ॥ जोरि भुजा तनतोरि लिया अंगरानि खरी अरसाय जँभाय कै। बैठीहुती ढिग आई अली

सुदई सब ऊमदीसों उठायकै ॥ ३३८ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० निशिअँधियारीनीलपट पहिरिचलीपियगेह ॥
कहौदुराईक्योंदुरै दीपशिखासीदेह ॥ ३३९ ॥

यह नायिका कृष्णाभिसारिका सखी की शिक्षा अंगदीप्ति आधिक्य अरु जो प्रत्युत्तरहोय तौ नायिका के बचन तें रूपगर्विता होय ॥ कवित्त ॥ हेरि हेरि अंगन लगावत अगरतुम फेरि फेरि येतो फेर काहे तू करति है । लालके संदेश रचि जात हिये भीजि भीजि आवत पसीनि सुघराई उघरति है ॥ मंडन छबीली यह कवितेरी छाजति है मेरी या अंधेरीमें तू दियासी बराति है । आपही तें कर चतुराई चल्यो चाहत सुगातकी गुराई यों दुराई क्यों दुरति है ॥ ३३९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० अरीखरीसटपटपरी बिधुआधेमगहेर ॥
संगलगेमधुपनलई भागुनगलीअँधेर ॥ ३४० ॥

॥ यह नायिका कृष्णाभिसारिका अपनी रातकी बात सखी सखी सों कहति है राहमें चन्द्रोदय भई छायलीनी या पदतें रूपगर्विताहू भई ॥ सवैया ॥ श्यामनिशा लखि तैसोईसाज शृंगार कछौ पतिपास चलीरी । त्यों अधगैल उदोत भयो शशि देखत सोमति शोच लगीरी ॥ पंकज छांड़ि सुगन्ध के लोभ लगी संग भौंरन की अवलीरी । ताहीसमय ममभागनि आयकै छायलई उन कुंजगलीरी ॥ ३४० ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० छिप्योछपाकरछितिछयोतमुससिहरनसम्हारि ॥
हँसतिहँसतिचलिशशिमुखी मुखतेंआंचरडारि ३४१

यह नायिका शुक्लाभिसारिका राहमें चन्द्र अस्तभयो देखि संकुचित भई तब सखी सावधान करति है ॥ सवैया ॥ तेरे कहे सजि शुभ्रशिंगार चली बलि हैं गहिकै गतिमन्दहि । अथयो सोम अली अथवीचही देखि छये छितिपै तम बृन्दहि ॥ घूंघुटको पटटारिकै प्यारी उघारिदै तू अपने मुखचन्दहि । वारसनै मति जोन्ह हँसी कर यों चलिकै मिलरी नंदनन्दहि ॥ ३४१ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० उठिठकुठकुयेतौकहा पावसकैअभिसार ॥
जानिपरैगीदेखियो दामिनिघनअँधियार ३४२॥

यह सखी नायिका सों कहति है कि अभिसारको सहजही समय है नायिका परकीया ॥ सवैया ॥ क्यों तन नील निचैल सजै राखि क्यों मृगमंदको लेपकरैगी। पावसकै अभिसारको येतो विचार कहा चितमाहिं धरैगी ॥ कुंजके भौन निशंक है क्यों न चलै हरिकंतहि अंकभरैगी। श्यामघटा की अँधेरी में तेरी छटासी तन द्युति जानि परैगी ॥ ३४२ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥ शुक्लाभिसारिका ॥

दो० युवतिजोन्हमेंमिलगई नैननहोतलखाइ ॥
सौंधेकेडोरनलगी अलीचलीसँगजाइ ॥ ३४३ ॥

यह नायिका शुक्लाभिसारिका सखीको बचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ तनकी गुराई तरुनाई की निकाई छाई जाकी उजराई ते उजारी उपमाति है। शरद निशामें प्यारी विशद शृंगारसजै गजगमनीकी शोभा अतिसरसाति है ॥ चली अनुरागी मिलि मोहनके मिलिबे को चांदनी में मिलगई क्योंहूं न लखाति है। सौंधेके डोरन सुलगी अली संगचली मानों पूनोचन्द सहतारन लखाति है ॥ ३४३ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० गोपअथाइनतेउठे गौरजछाईगैल ॥
चलिचलिअलिअभिसारकीभलीसंझोखेसैल ३४४

यह नायिका संध्याभिसारिका सखीको बचन नायिका सों कि ऐसे समय अभिसारिका ॥ सवैया ॥ छोड़ि अथाइन गौलयवेको उठी सब गोपन की अवली है। छीन भई सुखही रविकी छवि गौरज पूरत गैलगली है ॥ चंदकला प्रकटी न अजौं चलि क्यों न करै अलि रंगरली है। मानि सुहागिनि मेरी कह्यो अभिसारकी सैल सँझोखे भली है ॥ ३४४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० पलसोहैंपगपीकरँग छलसोहैंसबबैन ॥
बलसोहैंकतकीजियत येअलसोहैंनैन ॥ ३४५ ॥

यह नायिका प्रौढा अधीरा खण्डिता नायिकाको बचन नायकसों ॥ कबित्त ॥ सोहत शिथिल गात या रसमें पागे निशिजागे ताते आरसके ढार ढरियतु है। बैन तुतरात अंगरात मुर बेरि बेरि फेरि फेरि हेरि हेरि हिय हेरियतु है ॥ बैनसने छलसोहैं पीकपगे पलसोहैं देखि छवि हगनि अनन्द भरियतु है। कृष्ण प्यारे श्रम काहेको करत एतो अलसोहैं नैन बलसोहैं करियतु है ॥ ३४५ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० मंदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० कतलपटैयतमोगरे सोनजुहीनिशिशैन ॥
जिहिचंपकवरनीकियेगुललालासेनैन ॥ ३४६॥

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता फूलन के नाम शब्द को चमत्कार है ॥
सवैया ॥ मोगरे भूलि न लागिकै लालन सोनजुही निशि शैन,में प्यारी । जाको
लसै तन चंपक सी दशनावलि कुन्दकली छबिधारी ॥ लोचनलाल गुलाला के
रंग करे निजरैनि जगायबिहारी । निंदतहै अरबिन्दनकी छवि पीतपराग भरे
भरभारी ॥ ३४६ ॥ मराल अच्चर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कत्तकहियतदुखदैनको रचिरचिबचनअलीक ॥
सबैकहावरह्योलखै लालमहाउरलीक ॥ ३४७॥

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥
आज मयाकरें मेरे पधारे लसी छबि रैनबिहार बिहारे । क्यों कहिये दुखदैन को
बैन बनाय बनाय सनेहहि हारे ॥ घूमतलोचन नींदभरे उघरे उरमें नखचिह्न ति-
हारे । और कहाव रह्यो सब लाल लिलार महाउरलीक निहारे ॥ ३४७ ॥
मराल अच्चर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० पटसोंपोंछिपरीकरौ खरीभयानकबेख ॥
नागिनह्वैलागीहगन नागबेलरसरेख ॥ ३४८ ॥

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन नायकसों ॥ सवैया ॥
आज मयाकर मेरेपधारे खुली बड़भागिनिकी सुघरी है । प्रीतम ये पटसों रसपोंछि
परीकरो मोमति हेर हरी है ॥ लागत है मम नैनको आहि सुभामिनिसी मैं भूरि
भरी है । केलिसमै अहिबेलिके रंगकी रेखनिमेषनिपै उघरी है ॥ ३४८ ॥ मदकल
अच्चर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० जिहींनामभूषणरच्यो चरणमहाउरभाल ॥
उहींमनौंआँखियाँरँगीं ओठनकेरँगलाल॥३४९ ॥

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥
वाही के नैनको काजर ओठपै नीको लग्यो जनि पोंछिकै खोऊ । वाही के पायँ
को जावक रंग लिलार महाछवि देतहै सोऊ ॥ ऐसो बनाय शृँगार कस्यो जिहि
है वह बाल विचच्छन कोऊ । जानहुं लाल रँगी उनहीं आँखियां अधरान के रंगमें
दोऊ ॥ ३४९ ॥ मदकल अच्चर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० पलनपीकअंजनअधर धरेमहाउरभाल ॥
आजमिलेसभलीकरी भलेबनेहौहाल ॥ ३५० ॥

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिकाको बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ आज बनेहौ भले नँदलाल भये सब बानिक सोहतभारी । मंहनु आंखिन पीक लगी अरु लीकलगी कछु ओठनकारी ॥ बाई तो बांहतिलोछ्रही यह दाहनीबांह लिहात तिहारी । बैठी खगेखगि लाग उठी यह कैसी बिराजत बीरनसारी ॥ ३५० ॥ चल अच्चर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० वाहीकीचितचटपटी धरतअटपटेपाय ॥
लपटबुझावतबिरहकी कपटभरेऊआय ॥ ३५१ ॥

प्रौढाधीरा नायिका को बचन नायिका सों ॥ कबित्त ॥ अनत बसे को हौंतो बिलगु न मानत हौं सब रसबस कीयो चाहै बहुनायकै । ताके भागे जागे जाके संगनिशिजागे मेरे भोरभये आये हितू हियकौ जनायकै ॥ जानियतु वाहिकी लागीहै चितचटपटी अटपटे चरणपरत उगलायकै । लपट बुझावतहौ बिरह हुताशनकी कपट भरेऊ प्राणप्यारे तुम आयकै ॥ ३५१ ॥ मराल अच्चर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० गहिकगांसऔरैंगहै रहैअधकहैबैन ॥
देखिखिसोहैंपियनयन कियेरिसोहैंनैन ॥ ३५२ ॥

यह नायिका खण्डिता नायक सुरतके चिह्न दुरायकै याके आये यह बात करन लावत रातमें नायक के नेत्रदेखि तेइ न जानी सो बातछोड़ि कोपके गांस गहै सखी को बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ आवत प्राणपतीहि बिलोकि सुधासम नेह की डीठसों हेरे । धायकै आगे है आयलये हियमें उमँगे सुखपुंज घनेरे ॥ आधेसे बैनकहै रहै मुखगांस भरे उरकोप करेरे । कान्हके नैन खिसात बिलोकि रिसाइकै प्यारी तिही हगफेरे ॥ ३५२ ॥ मराल अच्चर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० पावकसोनैननलग्यो जावकलग्योजुभाल ॥
मुकरजाहुगेपलकमें मुकरबिलोकोलाल ॥ ३५३ ॥

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन नायकसों ॥ कबित्त ॥ मैन छबि रैनके उनींदे नैन मूंदेआवै नींदके अरस इन्दीबरनदरत हौ । पियरो बदन भयो हियरो छुवंत मोहिं सियरो करत ज्यों ज्यों नियरो करतहौ ॥ आ-

लम सुप्यारी जिय ऐसेके पठाये पिय ताके उठि दिनप्रति पायन परत हौ। कच मुकराये मधुकरकीसी माल लाल मुकरबिलोको कत मुकरे करतहौ ॥ ३५३ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० तेहतरेरेत्योरकरि कतकरियहदगलोल ॥
लीकनहींयहपीककीश्रुतिमनझलककपोल॥३५४॥

यह नायक सापराध जानि नायिका नेत्र चंचल करत है सो नायिका सखी नायिका के चित्तको भ्रम निवारणकरत है सखीको बचन नायिकासों नायिका सखीसोंकहै तो भूतसुरतगुप्ता परकीया होय॥ कवित्त॥ आज लखि पति कछू औरैभांति तेरीगति आननपै उमँग ललाई ललकति है। भृकुटी कुटिल अति तेहसों तनेनी भई नैनन में रिसकी तरंग छलकति है ॥ कहै कबिकृष्ण यह धोखोहि इहांतो करि पीकलीक जानतूजबोल बलकतिहै। ललित कपोल पर नीकेकै बिलोकि छबि भूषणकी मनकी झलक झलकतिहै॥ ३५४॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० आयेआपभलीकरी मेटनमानमरोर॥
दूरकरोयहदेखिहै छलाछिगूनीछोर॥३५५॥

यह खण्डिता नायिकाकी सखी नायक सों कहति है॥ सवैया॥ आप कृपा कर आयेभली करी आजको बानिक मो मन मोहै। देखत रावरी मोहनी मूरति मानमरोर धरै उर कोहै॥ काहू छबीलीको छोटोछला यह छोर छिगूनी के छाजतछोहै। देखिरिसायगी दूरकरो कछू जानत हौ अनआय लसोहै॥ ३५५॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० लालनलहिपायेदुरै त्योरीसौंहकरैन॥
शीशचढ़ेपनिहांप्रकट कहैंपुकारेनैन॥३५६॥

यह नायिका प्रौढा धीरा खण्डिता नायिका को बचन नायक सों॥ सवैया॥ आये उनींदे जँभात तऊ कछुभेद न जान्यों हियेकी मैं भोरी। या कुचकुंकुम के लगे चिह्न मिलायहिये मसके जिहि गोरी॥ लाललही अबतो सब बात दुरै नहिं सौंहकरौ किन होरी। शीशचढ़े पनिहां दोऊ नैन पुकार कहैं रतिरंग की चोरी॥ ३५६॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १४ लघु २१॥

दो० तुरतसुरतकैसेदुरत मुरतनैनजुरिनीठि॥

डौंड़ीदैगुनरावरे कहैकनौड़ीदीठि ॥ ३५७ ॥

यह नायिका प्रौढा अधीरा खण्डिता सखीको बचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ चिह्न अंग अंगके दुराये चतुराईकै पै आरस गमन गात दुरहइनात है। प्रेम सुधा पान के हुलासतें मुदित मन मैन मुखसनें ऐन बैन तुतरात है ॥ तुरत सुरत कहौ कैसेकै दुरतलाल नीठिजुरि मुरत नयन जलजात है। कृष्ण प्राणप्यारे यह डौंड़ी दै कनौड़ी दीठि प्रकट करत रात रतिवारी बात है ॥ ३५७ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मरकतभाजनसलिलगत इन्दुकलाकेबेख ॥
झीनझँगामेंझलमलै श्यामगातनखरेख॥३५८॥

यह नायिका खण्डिता नायिकाको बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ नाहकी छाती में देख नखच्छद नारिनवोढा कह्यो पुन ऐसें। सुन्दर बागेकी चोली में मेलिकै ल्यायेहो चन्दकला धरिकैसें ॥ खेलिबेको इमहैं यह देहजू यों कहिकै हरि दौर हरेसें। लायलई उरसों हँसिकै गसि दोऊ रहे कसि राखिये जैसें ॥ ३५८ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० नखरेखासोहतनई अलसोहैंसबगात ॥
सोहैंहोतननैनये तुमसोंहैंकतखात ॥ ३५९ ॥

यह नायिका प्रौढा अधीरा खण्डिता नायिकाको बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ हरिजानिपरी हमहूँ पै मया पगधारे इतै रतिकेलिकिये। तुमतौ सबके सुखदायक हौ सबही को बनै सुखपुंजदिये ॥ मुकरो जिन ये प्रकटै लखिये जुलगी टटकी नखरेखहिये। दगसौंह न होत सकोचनते अब काहेको सौंह इतीकरिये ॥ ३५९ ॥ वारिन अक्षर ३६ गुरु १० लघु २६ ॥

दो० तरुनकोकनदबरुनबर भयेअरुननिशिजागि ॥
वाहीकेअनुरागदग रहेमनोअनुरागि ॥ ३६० ॥

यह नायिका प्रौढा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन नायकसों ॥ कवित्त ॥ कृष्ण प्राणप्यारे प्रात प्रीति कै पधारे मेरे देखे मैन मूरति विरह गयो भागिकै। मरगजे बागे रसपागे लटपटी पागै आसर मगन अंगरहै अंकलागिकै ॥ रावरे लसत अतिलोचन ललितभये कोकनद अरुनवरुन निशि जागिकै। मेरे जान प्राणपति

वाही प्राणप्यारी के परम अनुराग में रहे हैं अनुरागिकै ॥ ३६० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सोहतसंगसमानसों यहैकहैंसबलोग ॥
पानपीकओठनबनै काजरनैननयोग ॥ ३६१ ॥

यह नायिका प्रौढा खंडिता नायिकाको बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ ग्रंथनतैं यह बात प्रमाण है यों चलिआयो मतौ सबहीको । जैसेको तैसोई योग जुरै तब होत महासुखदायक जीको ॥ जो बिपरीत बिलोकिये संग कुढंगतही रँगलागत फीको । पानकी पीकबनै प्रिय ओठन आंखिनही लगै काजर नीको ॥ ३६१ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० प्राणपियाहियेमेंबसी नखरेखाशशिभाल ॥
भलौदिखायोआनयहहरिहररूपरसाल ॥ ३६२ ॥

यह प्रौढा अधीरा खंडिता नायिकाको बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ पूरण प्रेम सों प्राणपियारी बसायहिये हियरो हुलसायो । भालनई नखरेख बिराजत सोय मयंक लसे छबिछायो ॥ लोचन रागु रजोगुण राजत झूमत नैन तमोगुण पायो । पीतम प्रातही आनि यहै जुभलो हरि को घर रूप दिखायो ॥ ३६२ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० यहांनचलिबलिरावरी चतुराईकीचाल ॥
सनखहियेखिनखिननटतअनखबढ़ावतलाल ३६३

यह नायिका प्रौढा अधीरा खंडिता नायिकाको बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ यहां न चलै कछू रावरी लाल चलावत जे चतुराई की चाल । छाती नखच्छद पीक सुगाल धरे अतिरंग महाउर भाल ॥ खात इतेपर सौंह गुपाल हिये उमँगावत क्यों रसजाल । भाग बड़े उहि भामिनी भाल हिये उमँगी जिह भेटत भाल ॥ ३६३ ॥ नर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० वैसीयेजानीपरति झँगाऊजरेमांह ॥
मृगनैनीलपटतजुयह बैनीउपटीबांह ॥ ३६४ ॥

यह नायिका प्रौढा अधीरा खंडिता नायिका को बचन नायकके विद्यमान सखीहू सों कहै ॥ कवित्त ॥ काहेको करत चतुराई के चरित्र लाल शोचभरी सूरत प्रकट पेखियतु है । सौंहैं जिन करौ नैन नेक सोहनीसी शोभा अतिही

बिराजै अंग अंग लेखियतु है ॥ कृष्ण मारुप्यारे कुच कुंकुम की छायरही छाती पै उपरि यह अवरेखियतु है। मृगनैनी लपटति ऊपटीखये पै बैनी ऊगरे भँगा में अरटेपी पैजयतु है ॥ ३६४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० नकरुनडरुसबजगकहत कतबेकाजलजात ॥
सोहैंकीजैनैनजो सांचीसोहैंखात ॥ ३६५ ॥

यह नायिका प्रौढा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ मोहितो लागत नीके सदा तुम आये प्रभात प्रभात रसोहैं। जो करिये तो हिये डरिये बिन कीये किते डरिये डरसोहैं ॥ क्यों बिनकाज सँकोच भरौ उर काहे को कीजत नैन लजोहैं। जो तुम सांची ये सौंह करौ हरि तौ इत क्यों न करौ मुखसोहैं ॥ ३६५ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० रहोचकितचहुँघाचितै चितमेरोमतिभूलि ॥
सूरउदयआयेहगन रहीसांझसीफूलि ॥ ३६६ ॥

यह नायिका प्रौढा अधीरा खण्डिता नायिकाको बचन सखी से होय नायक सों होय ॥ सवैया ॥ देखत रावरी मोहन मूरति मोहिं सबै सुधि भूलि रही है। आज महाछवि छाजत भोर निकाई सबै अनुकूलि रही है ॥ चाहिरह्यो चहुँघा चकिसो चित आचरजै मति झूलि रही है। आयेहौ सूरउदोत भये बिबिनैनन सांझसी फूलि रही है ॥ ३६६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कतबेकाजचलाइयत चतुराईकीचाल ॥
कहेदेतयेरावरे सबगुनबिनगुनमाल ॥ ३६७ ॥

यह नायिका प्रौढा अधीरा खंडिता नायिका को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ सौतिके धाम बिराम कै आपु प्रभातइते पगधारत हौ जब। मैन छकी छबि ऐन दिखाय अनंदहिये उपजावतहौ तब ॥ क्यों बिनकाज चलावतहौ चतुराईकी चाल लला हमसों अब। माल बिना गुनकी उरपै उपटी गुनरावरे देत कहे सब ॥ ३६७ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० दुरैनघरिधांधौंदिये येरावरीकुचाल ॥
बिषसीलागतहैबुरी हँसीखिसीसीलाल ॥ ३६८ ॥

यह नायिका प्रौढा अधीरा खण्डिता नायिका को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ जानतहो हियके हितसों उनहींके बसे सुखसों निशिनासी। भोर किहू भ्रम भूलि

कै लाल पधारे इतै कछु कीनी कृपासी॥ ढीठचो दियो कहो कैसेदुरै इहओरहीते जु कुचाल प्रकासी। लागत बीसबिसे बिषसी सुखिसापन के मुख आवतहाँसी॥ ३६८॥ मराल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० गड़ेबड़ेछबिछाकुछकि छिगुनीछोरेछुटैन॥
रहेसुरँगरँगरँगिउहीं नुहदीमहदीनैन॥ ३६९॥

यह महदीको वर्णनहै अरु जो नायिका को बचन नायकसों होय तो खण्डिता होय जो नायिकाको बचन सखी सों होय तो गुणकथन॥ सवैया॥ वाकी छबीली छिगूनी के छोरतै ये रुचपुञ्ज नयेई नयेहैं। तापर चारुलसै नुहदी महदी दल बिद्रुम जीत लये हैं॥ ताकी महाछबि के मदछाकि छुटैं न अजौं गड़ ऐसे गये हैं। ये चिबि लोचन वाईके रंगमें राचिकै मानो सुरंग भये हैं॥३६९॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० कतसकुचतनिधरकफिरौ रतिपोषोक्तुमैन॥
कहाकरौजोजानिये लगेलगोहैंनैन॥ ३७०॥

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायिकाको बचन नायक सों॥ कबित्त॥ कृष्ण प्राणप्यारे आज प्रीतके पधारे होते तनमनवारौं बहुहुलसि बधाइये। नेक निरखन लगे जाहि जो लगेहैं नैन ताको तुम कहाकरौ ग्रीव न नवाइये॥ कैसे राख्यो जात मोरिसनु बँध्यो प्रेमडोरि तुम तन खोरि कहो रंचको न पाइये। काहे को सकुच कीजै रुचै तितै सुखदीजै अलिहै निशंक रसलीजै जहां पाइये॥ ३७०॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० अनतबसेनिशिकीरिसनु उरबररहीबिशेखि॥
तउलाजआईझुकत खरेलजौंहैंदेखि॥ ३७१॥

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा सखी को बचन सखी सों॥ सवैया॥ राति कहौं अनते बिताई मनमोहन केलि कला सुखसौंहैं। ताते हिये अतिही रिसछाय रही अनखाय चढाय कै भौंहैं॥ भोरही आवत देखिजऊ कहिवे कै भई झुकचैन रुखौहैं। आई तऊ अतिलाजहिये निरखे जब लाल खरेई लजौंहैं॥ ३७१॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० बिलखीलखैखरीखरी भरीअनखबैराग॥

मृगनैनीसैनननभजै लखिबेनीकेदाग ॥ ३७२ ॥

नायिका अन्यसंभोगदुःखिता सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ साजिशृं-गार हुलासकै आई बिलोकिरही चखि दूरते भङ्कहि । सौतिकी चीकनी चोटीको दाग लग्यो टटकौ पतिकै परयङ्कहि ॥ ठाढ़ी जकीसी कपोलधरे कर रोषभरी भृकुटी करि बङ्कहि । शोचसनी बिलखै मृगलोचनि लेत उसासन आवत अङ्कहि ॥ ३७२ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नईबिरहबढ़तीब्यथा खरीबिकलजियबाल ॥
बिलखीदेखिपरयोसन्योहरबिहँसीतिहिकाल ३७३

यह नायिका अन्यसंभोगदुःखिता एकतो नायक यासों हित नाहीं करत तातें बिकल है दूसरी परोसिन देखी ताही समय तब खरी बिलखी अरु नायक याके परोससों रहत है सो वह यह बिलखी देखि अतिप्रसन्न भई ॥ सवैया ॥ बालमको हित आन बधूसों रहै न कहूं घर एक घरी है । ता दुख बाल महा जिय ब्याकुल कामज्वरी कुलकान परी है ॥ बाढ़ी ब्यथा अतिदाहदीसी डोलति गाढ़ी बियोगकी गाढ़ परी है । त्यों मृगनैनी परोसको देखि खड़ी बिलखी लखि मोद भरी है ॥ ३७३ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० रही पकरि पाटी सुरसि भरे भौंह चितनैन ॥
॥ लखिसपनेतियआनरतिजगतहुलगतहियेन ३७४

॥ अह नायिकाने स्वप्नमें नायक अन्यासक्त देख्यो तब जागतहू मान नाहीं छोड़त अन्यसंभोगदुःखिता सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ दंपतिकेलि कलोलपगे उर लागे रमोय मये पलि काहीं । ऐसे में प्यारी लख्यो सपनो हरि आन बधू सों किये गलबाहीं ॥ पाटीसों लागिरही मृगनैनी भरी रिसनैनन भौंहन माहीं । चौंकि यहै चित पागी महा तिय जागी निशा हिय लागत नाहीं ॥ ३७४ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० छलापरोसिनहाथते छलकरिलियोपिछान ॥
॥ पियहिदिखायोलखिबिलखिरिससकुचीमुसकान ३७५

यह नायिका अन्यसंभोगदुःखिता सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ पेखि परोसिनके करप्यारी करी चतुराईके चारुकलाहै । मांगिलियो कछु ऊठमसों बहु कै बहुहारि. छलाऊमला है ॥ प्रीतमसों मुसकाय कही कविकृष्ण कहैं रुख रोष

रलाहै। नेक इतै लखिये मनमोहन आज भलो हम पायो छलाहै ॥ ३७५ ॥
करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० गह्यो अबोलो बोलप्यो आपै पठै बसीठि ॥
दीठिचुराईदुहुनकी लखिसकुचौंहींडीठि॥३७६॥

यह नायिका अन्यसंभोगदुःखिता सखीको बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ आपनी प्यारी अलीको पठै पियप्यारे को आपही बोलि पठायो। आगे है आब लियो हितसों हियरो हुलस्यो नियरो जब आयो ॥ येतेमें कृष्ण दुहूनकी दीठि लजौंहीं लखी उरते इतचायो। बोलैंकी भारी भलोलो भरयो जिय कासों कहै अपनो इहकायो ॥ ३७६ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० सुरंगमहावरसौतिपग निरखिरही अनखाय ॥
पियअंगुरिनलालीलखैउठीखरीलगिलाय॥३७७॥

यह नायिका अन्यसंभोगदुःखिता सखीको बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ पेखि सुरंग महावर सौतिके पांयन बाल रही अनखानी। याही बिलोकि बिकायगो मोहन बात यहै अपने उर आनी ॥ येतेमें प्रीतमकी अँगुरीन ललाई बिलोकि खरी बिलखानी। पावक बाल जगी उरमें मुरझात महारिसमें अकुलानी ॥ ३७७ ॥
पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० बिथरयोजावकसौतिपग निरखहँसीगहिगांसु ॥
सलजहँसौंहींलखिलियोआधीहँसीउसांसु॥३७८॥

यह नायिका अन्यसंभोगदुःखिता सखीको बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ बाल हँसी कछु गांस गहै लखि फैल्यो महावर सौतिके पायनि। जानि यहै अपने जियमें यह जानित नाहीं शृंगारके भायनि ॥ येतेमें मोदभरी मुसकात लजौंहीं बिलोकनि देखि सुभायनि। आधीये हांसी उसासभरी अकुलात खड़ी बिसरी चितचायनि ॥ ३७८ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० हठहितकर प्रीतम लियो कियोजुसौतशृंगार ॥
अपनेकरमोतिनगह्यो भयोहराहरुहार ॥ ३७९ ॥

यह नायिका अन्यसंभोगदुःखिता याको हार नायकने लैके सौतको पहरायो सो नायिका सखी सों कहै ॥ सवैया ॥ मांगि लियो हितके हठि प्यारे ने हारु सुचारु प्रभानसों पाग्यो। ताहिलै लालची लाल गह्यो काहू सौतिके पाम तिहीं

अनुराग्यो ॥ वाहीकी रीझ शृंगार कियो लखि याके हिये अनुराग जाग्यो। आपने हाथ बनाय गर्यो मुकताको हराहर हार सो लाग्यो ॥ ३७९ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० प्यारोशोरसुहागको इन बिनहीं पियनेह ॥
उनदेहीअँखियांककै कैअलसोंहींदेह ॥ ३८० ॥

यह नायिका सौति को आलस बलदेखि अरु रसमसी आंखि देखि सखी सों काकुध्वनिकरि कहतु है अन्यसंभोगदुःखिता होय जोई सखी नायकसों कहै तौ याकी रिस को निवारण होय ॥ सवैया ॥ सैंकरि आंखि उनींदीकरी अधऊ-तर सों मुख बोल उचारयो। बारहींबार जँभायकै यौंहीं खरो तन आरसके ढंर ढारयो। झूठी जतावत है सुखसेन जगी यह यामिनि याम निवारयो। देखि तौ प्रीतमकी बिन प्रीति सुहागको शोर कितो यह पारयो ॥३८०॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सखिसोहतगोपालके उरगुंजनकीमाल ॥
बाहिरलसतमनोपिये दावानलकीज्वाल ॥ ३८१ ॥

यह नायिका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायिका को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ भाग बड़ी निरख्यो यह बानकु आजुकी हौं बलिजाऊं घरीकी। ऐनप्रभालखि लागत है कछु मोहिंतो मैनकी मूरति फीकी ॥ देखरी मोहन के उर भावती माल विराजत गुंजकीनीकी। पीवहुती प्रकटी सुतौ बाहिर ज्वाल मनौं बड़वानलहीकी ॥ ३८१ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० मुँहमिठासदृगचिकनई भौंहैंसरलसुभाय ॥
तऊखरेआदरखरो खिनखिनहियोसकाय ॥ ३८२ ॥

यह नायिका सादरा धीरा प्रौढ़ा नायिकाको बचन नायिका सों ॥ कवित्त ॥ बदन कमलते अधिकहितसाने बैन मधुरेकढ़त अमी जिनमें चुचातु है। भृकुटी सुभायही सरल लखियत कहूं रोष की न रंच लवलेश दरशातु है ॥ नेहकी नि-शानी रससानी चितवनि त्यों हीं कैसेहूं न मोपै यह भेद लख्यो जातु है। ज्यों ज्यों अतिखरो आपु आदर करत प्यारी त्यों त्यों मेरो हियो खरो खरोई सकातु है ॥ ३८२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० खरेअदबइठलाहठी उरउपजावति त्रासु ॥

दुसहशंकबिषकीकरे जैंसेसोंठमिठासु ॥ ३८३ ॥

यह नायिका सादरातिधीरा प्रौढ़ा नायिका को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ गांसगह्यो उर में जितनो कछु मैंतो न चूक इतीक करी है। बानसभी इठलाहठकी अबकाहिलौं धौं नहिंजानिपरी है ॥ त्रासहिये उपजावै खरो अतिआदर सों अभिमानभरीहै। सोंठ चबात ज्यों मीठी लगै सबकोऊ कहै बिषहीकी डरीहै॥ ३८३॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नहिंनचायचितवतदृगन नहिंबोलतमुसकाय ॥
ज्योंज्योंरुखरूखोकरै त्योंत्योंचितचिकनाय ३८४॥

यह नायिका प्रौढ़ा धीरा अकृतगुप्ता नायिकाको बचन नायकसों ॥ कबित्त ॥ जोरत न लोचननचाई नेहन्हाईभरे मुरिमुसकात कौन भाव दरशात है। बोलत न कहूं मनमोहन मधुर बैन मोरजिन भृकुटी मरोरत न गात है ॥ कहै कविकृष्ण वाकी गरबीली बानिकछू सहज बशीकरको मंत्र जान्यो जात है। ज्योंहीं ज्यों रहत प्यारी राधा रूखे रुखकरि त्योंहीं त्यों खरोई खरो चित चिकनातु है ॥ ३८४ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० जोतियतुमजियभावती राखीहियेबसाय ॥
मोहिंझुकावतदृगनह्वै वहईउझकतिआय॥३८५॥

यह मान भ्रम नायककी आंखिन में अपनो प्रतिबिंब देखि अरु स्त्री जानि नायिका कहति है ॥ सवैया ॥ नेकमनि करो पायँपरौं हरि काहे सों मोसों रसीदतिहै। राजकरो नित याहि लिये रहौ यामें कहा कहनावतिहै ॥ जो तुम राखी बसायाहिये पियप्यारी तिहारी कहावति है। झांकत रावरी आंखिन आन वहै तियमोहिं झुकावति है ॥ ३८५ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० चिरजीवोजोरीजुरै क्योंनसनेहगँभीर ॥
कोघटिहै बृषभानुजा वे हलधरकेबीर ॥ ३८६ ॥

यह परस्पर मान सखीको बचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ अनगने औठपाय रावरे गने न जाहि वेऊ आहि तमकि करैया अतिमानकी। तुम जोई सोई कही वेऊ जाय सोई सुनें तुम जीभपातरे वे पातरी हैं कानकी। कैसो कैसो रायकाहि बरजौंमनाऊं काहि आपने सयान कैयों सुनत सयानकी। वेऊ बड़वानल की

है है सोई अहै पीच तुम बासुदेव बे हैं बेटी वृषभान की ॥ ३८६ ॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु ७ लघु २४ ॥

दो० दोऊअधिकाईभरे एकैगौंगहराय ॥
कौनमनावैकोमनै मानैमतठहराय ॥ ३८७ ॥

यह परस्पर मान है दोऊ अधिकाई भरे सो नायिका मानवती नायक रूप मानी अथवा नायिका को मान देखिवे की गौं है सखीको बचन सखीसों अरु दोऊ अन्यासक्तहोहिं यह कहिवो संभव है ॥ सवैया ॥ आज चलीं रसही रसमें कछु बात दुहूंनसों क्यों कहि आवै । लै अपनो अपनी रिसमें अरुझायो हियो अबको सुरझावै ॥ दोऊखरे अधिकाई भरे गहे एकही गौं कोउ भेद न पावै ॥ कौन मनावै मनै कहिको मनमानो दुहूंनको मानहीं भावै ॥ ३८७ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मानकरतबरजतनहीं उलटिदिवावतिसौंह ॥
करीरिसौंहींजाहिगी सहजहँसौंहींभौंह ॥ ३८८ ॥

यह मान दृढ़ावतहै सो मान छुड़ायबो प्रयोजनहै सखीको बचन नायिका सों ॥ सवैया ॥ रूखो करयो रुख नैन चढ़ाय कै बैन कहै मुखते अनखौहैं । मान करयो सुभलीकरी हौं न मनैकरौं और दिवावति सौहैं ॥ मोहूंसों बूझे न ऊतर देत सुदेखोगी मोहनको मुख जोहैं । होयगी सोहैं रिसौंहैं रि लालसु सहजही तेरी हँसौंहीं ये भौंहैं ॥ ३८८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० रसकैसेरुखशशिमुखी हँसिहँसिबोलतबैन ॥
गूढ़मानमनक्योंदुरै भयेबूढ़रंगनैन ॥ ३८९ ॥

यह नायिका अधीरा को मानहै सो सखी नायककी नायिका सों कहत है ॥ सवैया ॥ ऊपरकोरस कोसों करयो रुखभाव किये हितके सरसातें । सूधेचितै हँस बोलतबैन कढ़ै मुखमीठे सुभाव सुधातें ॥ नेहके चिह्न जनाय सबै विधि श्वास दबायकै तेहके तातें । मान हियेको दुरै केहि क्यों जु मँजीठ के रंगभये दृग रातें ॥ ३८९ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० चितवनरूखेदृगनकी हाँसीबिनमुसकानि ॥
मानजनायोमानिनी जानिलियोपियजानि ३९० ॥

यह नायिका मानवती पै मानके लक्षण कुछ प्रकट करै नहीं पै प्रवीण नायक

ने जानी सखी को बचन सखीसों नायिकाहूसों होय ॥ कवित्त ॥ वैसेही चितौन जैसे आगे चितवतही पै नेह चिकनाई को न हगन निशानी है । मधुर वचन त्योंहीं बोलत विहँसि पै सरस मुसकानकी न बान पहिंचानी है ॥ ऐसी भांति भामिनी जनाई झूठमारीति जानि मन प्यारे बेष देखतही जानी है ॥ साध कै रुखाई रिसठानी तें सयानी सो प्रवीननकी डीठ तें रहत कैसे छानी है ॥ ३९०॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० कपटसतरभौंहैंकरी मुखअनखौंहैंबैन ॥
सहजहँसोहैंजानिकै सोहैंकरतेनैन ॥ ३९१ ॥

यह मान परिहासहै नायिका प्रौढा सखीको बचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ प्रीतम की प्रीतिकी प्रतीति लखिबेको प्राणप्यारी कछु कीनो परिहास झूठो मान ठानि। कहै कबिकृष्ण उर ऊपर रुखाई भरि बदन बिदोरि बैठि धरिकै कपोलपानि ॥ आपनी अलीनहूं सों जोरतनु रुखमुख बैन अनखाय कहिबेकी ज्यों ज्यों गहीबानि । भृकुटी सतरकीनी कपटसों तानि ऐपै सोहैं न करत हग सहज हँसोहीं जानि ॥ ३९१ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० मनुनमनावनकोकरै देतरुठायरुठाय ॥
कौतुकलाग्योप्यौंपियाखिजहूरिझवतजाय॥३९२॥

यह नायिकाको मनदेखिबो प्रयोजनहै सो सखी सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ रोषभरी अंखियानहूंकी अविलोकन मांझ भरयो रसभारी । याहीतें मानहुँकोरुख देखिबेकी नँदनन्द हिये रुचिधारी ॥ होत मनोही प्रजा सबही तबसे करि देत रुसाय बिहारी । कौतुक लाग्यो इही रस के खिजहूके रिझावत राधिका प्यारी ॥ ३९२ ॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० भलेपधारेरावरे ह्वै गुड़हलको फूल ॥
ताहीदिनतेनामिट्यो मानकलहकोमूल ॥३९३॥

यह नायिका परकीया उपपतिको बिरह दुराइबे को पतिसों मानकीनो सो सखी सखीसों कहतिहै जो सखी नायकसों कहै तो खण्डिताहोय ॥ कवित्त ॥ जाही रजनी के घर बसै आनघर बसै जानै कौन कहां मंत्र कैसे पढ़िनायो है । वाही रजनी ते अजौं मिट्यो न अनैसा मान सखी पचिहारी काहू मरम न पायो है ॥ कहै कबिकृष्ण ऐसो रूठनो सुन्यो न देख्यो जैसो अहि लरिहार उरमें है-

दायो है। पाहुनैपधारै आछे फूल गुड़हरको है कलहको मूलवा बगर बगरायो है ॥ ३९३ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० मोहूंसोंबातनलगे लगीजीभजिहनाय ॥
सोईलैउरलाइये लाललागियतपाय ॥ ३९४ ॥

यह मध्यमा नायिका सों बातें करत जानि नायिका सों आसक्त होय नायक ने ताही को नामलीनों सो नायिका नायकसों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ कैतो राखोगोय हो मकट हियेको भाव जासों रंगमगि मन रल्यो अनुरागिकै । उघरो रसिक रस रीतिका प्रवीन वाकी भलै सुधि कीनी मोसों बातनहूं लागिकै ॥ कृष्ण प्राणप्यारे पूरी प्रीतिको धरम यहै पायो अब मरम भरम गयो भागिकै । पायँनपराति हरि वाही उरलेपै जाही रमनीको नाम रह्यो रसनामें पागिकै ॥ ३९४ ॥

दो० बिधिबिधिकौनकरे टरै नहीं परेहूपानु ॥
चितैकितैतेलै धर्‌यो। इतोइतेतनुमानु ॥ ३९५ ॥

यह मनायबो सखीको बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ खोयपरें मनमोहनहूं बहु भांति हिये रसभायभरे तौ। प्रीतिकी चोप चढ़ाय अलीन कही समझाय बिनैक-रि केतौ ॥ लोचन तेरे तऊ न चले अनखाय नचे अतिरोष रचेतौ। नेकचितै मृगनैन कितेते धर्‌यो भरि मान इते तन येतौ ॥ ३९५ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० अहैकहैनकहा कह्यो तोसों नन्दकिशोर ॥
बड़बोलीकितहोतबलि बड़ेदृगनकेजोर ॥ ३९६ ॥

यह मनायबो सखी को बचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ सांची कहि मोसोंअहे काहेते कहत नाहिं तोसों कहाकह्यो मनमोहन कन्हाईरी। क्यों तू बड़े बोल ऐसो बोलत गुमान भर्‌यो येती रिसरासतें कहा तैं गहि पाईरी ॥ कृष्ण प्राणप्यारो अतिहितू कै मनावत है करि मनुहार बहुबात में बनाईरी। मानकह्यो मेरा बलि उलटन करिजोपै तेही पाई बड़ी बड़ी आंख छबि छाईरी ॥ ३९६ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० हँसहँसाय उरलाय उठि कहि न रुखोंहैं बैन ॥
जकितथकितह्वैतकिरहे तकितबिलोछेनैन ॥ ३९७ ॥

यह मानका परिहासं नायक के विद्यमान सखी नायका सों कहति है जो

नायक को सुरतापराध दुरायवेको कहै तौहूं संभवहै ॥ कवित्त ॥ मान कियो होहि तो मनावै प्यारो पांयगहि रासके यतनको बिचार कहा कीजिये । रसिक रसाल तेरे लोचन बिलोके चाहि चकितह्वै रह्यो ऐसे नाहक न पीजिये ॥ हाहा मोहिं सौंहैं अब सूधी करि भौंहैं बिन कहि न रुखौंहैं लाल छाती लाय लीजिये। हँसिये हँसाइयेरी सुख सरसाइयेरी रस बरसाय दुख सौतिन को दीजिये ॥ ३९७ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० येरीयहतेरीदई क्योंहूंप्रकृतिनजाय ॥
नेहभरीईराखिये तूरूखीयलखाय ॥ ३९८ ॥

यह मनायवो सखी को बचन सखी सों ॥ कवित्त ॥ कौनपरी प्रकृति छुटा- येहूं छुटै न क्योंहूं ज्यों ज्यों कीजै छनी त्यों त्यों दून पेखियत है । कृष्ण प्राणप्यारे की दुहाई तेरी गति देखे मेरी मति शोचसों सनी बिशेखियत है ॥ यद्यपि सनेह भरे उर में बसाय प्यारे प्रीति सरसाई अनलेखे लेखियत है । तऊ तिय भौंहन में बैननमें नैननमें तेरे अंग अंगमें रुखाई देखियत है ॥ ३९८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० क्योंहूंसहबातनलगे थाकेभेदउपाय ॥
हठुदृढ़गढ़गढ़वैसुचलि लीजैसुरँगलगाय ॥ ३९९ ॥

यह गुरुमानहै सखी नायकसों कहतहै कि याको मान चलिछुटैगो सखीको बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ आज सज्यो हठको गढ प्यारी न देखत धीरज कौनको दीजै । क्योंनहूं भांतिलगै सहबातन भेद उपाय थके मतछीनै ॥ लोचन दूतनक्योंहूं मिलैं हरिमानिये मंतु बिलम्ब न कीजै । आप नहीं चलिये वल जासु सुरंगलगाय जो लीजै तो लीजै ॥ ३९९ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० अनरसहू रसपाइयतु रसिकरसीली पास ॥
जैसेसांठेकीकठिन गांठ्योभरीमिठास ॥ ४०० ॥

यह मानवती की शोभा सखी नायकसों कहति है ॥ कवित्त ॥ मानिनी तिहारी मनमोहन निहारी कछू मोपै न कह्यो परतु शोभाको बिलासहै । नासिका सिकोर मोर भृकुटी धनखि बैठी लोचनतु मांझ अरुणाई को प्रकासहै ॥ रसिक रसाल वा रसीलीकी बिलोकि छबि अनरसहू में ऐसे रसको निवासहै। कहै कवि कृष्ण जैसे सांठे की सरस रीति गांठिहै कठिन भरी तऊ पै मिठास है ॥ ४०० ॥ मरकट अक्षर ३४ गुरु १६ लघु १८ ॥

दो० हमहारीकैकैहहा पाइनुपारतप्योरु ॥
लेहुकहाअजहौंकिये तेहतरेरेयोरु ॥४०१॥

यह नायिका मानवती सखीको बचन सखीसौं ॥ कबित्त ॥ नेहनातो तोरि ति-नुकालौं तू तनगिबैठी तिमईकेहठ ऐसे देखे सुने हैं कहूं । केतिन न छाई ब्रजबाल-कलुगाई परितोसीपैरिहाई न दुहाई देखी मैंकहूं ॥ केती मनुहारि ठानी पायँपरेदधिदा-नी सतभायमानी मुखबानी आनी है कहूं । लागी काके मतरानी सांझहीतैं सत-रानी रैन्यों पतिरानी बतरानी तू न नैकहूं ॥४०१॥ भ्रमर अक्षर२७गुरु२२लघु५॥

दो० सोहैहू हेर्योनतैं केतौधाईसौंह ॥
येहौंक्यौंबैठीकिये ऐंठिउबैठीभौंह ॥४०२॥

यह अति गुरुमान है सखी को बचन नायक सौं ॥ कबित्त ॥ केती मनुहारि करि हारयो नंदलाल ब्रजबनिता निहाल होत जाके नैन चाहे तैं। होतो तू सयानी पर कहा चितआनी येते रिसके समाज बिनु काज अवगाहेतैं ॥ सौंह हेर-बेको हम केतीखाई सौंहैं तऊ तेरो मन लाग्यो क्यों न रसके उमाहेतैं। कियो कहा चाहति है सोहो क्यों न कहै बलि ऐंठी बैठी भौंहकरि बैठी अब काहेतैं॥४०२॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११लघु २६॥

दो० निरदइनेहुनयोनिरखि भयोजगतभैभीतु ॥
यहनकहूंअबलौंसुनी मरिमारियेजुमीतु ॥४०३॥

यह मान बिरह सखी को बचन नायक सौं नायक के पक्षकी सखी है जो परकीया नायिका कहिये तो कहिये ॥ सवैया ॥ ऐसो अधीन भयो मनमोहन तो बिन नेक न अंग समारहि। ताहि इतो तरसावत बावरी क्यों न करै मिलकुञ्ज बि-हारहि। तेरोनयो निरदेहित हेरि दुरयो जगुहोहि भरीभय भारहि। आजलौं ऐसी सुनी न कहूंगति आप मरै अरु मीतको मारहि॥ ४०३॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० हठनुहठीलीकरिसकै यहपावसऋतुपाय ॥
आनिगांठिज्यौंघुटततयौंमानगांठिछुटिजाय४०४॥

कबित्त ॥ दामिनी चपल गति सोऊ श्याम घनही सौं मिलि बिहरति अति शोभा सरसातिहै। द्रुमनसौं लहलही लतिका लिपटरही सबहीके उर प्रीति रीति

अधिकाति हैं ॥ कैसी येहठीली कोऊ रूठनी न ठानिसकै मदनमरूरिन सों छाती अकुलाति है। देखो रतिपावस के नेहकी निकाई माई आनिगांठ खूटै मानगांठ छूट जातिहै ॥ ४०४ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० सतरभौंहरूखेबचनकरतकठिनमननीठि ॥
कनाकरौंह्वैजातहरिहेरिहँसौंहींदीठि ॥ ४०५ ॥

नायिका प्रौढा उत्तमा सखी सिखावतिहै कि तू मानकर याके नायककी देखतही मान रहत नाहीं नायिकाको वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ तेरो कह्यो रुखरूसनौं ठानति हूं रुखरूखो कै तानति भौंहैं। नीठिकठोर करै मनहूं मुखहूतें बखानति बैन रुखौ हैं ॥ ताको कहावसु मेरी अली लचै लालची जो अपनी तकि गौंहैं। कैसी करौं मनमोहन को मुख देखत लोचन होत हँसौंहैं॥ ४०५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मिलैहुहूंकेहगझमकिरुकैंनझीनेचीर ॥
हलकीफौजहरौलज्यों परतगोलपरभीर॥४०६॥

मानमोचन सखी को वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ बैठी अलीगन में नवनागरि अचानक आयो तहां गिरिधारी। लालकी डीठि बचायबे को मुख घूंघटओट किये न निहारी ॥ नैनसों नैन उमंगि मिले न रहे पटओट कितौ पचिहारी। रोक सके न हरोलकी फौज ज्यों गोल पै आनि परै झरुभारी ॥ ४०६ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० मोहीकोछुटिमानगौ देखतहीब्रजराज ॥
रहीघरिकलौंमानसी मानकियेकीलाज॥ ४०७॥

मानमोचन सखीको वचनसखीसों॥ सवैया॥ बोलेहीबोलै हँसेहीहँसै अरु सैनकहै कछु बातहिये की। अंकहूं मांझ निशंकनि होत सुशंक हिये पिय पाय छियेकी ॥ केशवरायसों डीठि छिपाये छिपैगी कहूंनहिं ज्योति दियेकी। मोहन के मिलैमान छुट्यो पै छुटी नअसी मनुमान कियेकी ॥ ४०७॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु१८॥

दो० चलौचलैंछुटजायगौ हटरावरेसकोच ॥
खरेचढ़ायेहेतुअब आयेलोचनलोच ॥ ४०८ ॥

यह मानछुड़ायबे को सखी की प्रयोजन नायक को लैजायबे को है सखी को

वचन नायकसों ॥ सवैया ॥ जानेको कालिह तिहारी पियारी कहा जियजानि महा रिसठानी। केतीमैं बातबनाय मनायकरी मनुहार पै एक न मानी ॥ क्योंहूंके आज दरें हगभौंह कछूकनई जुहुती अतितानी । लालचलो अवलोकि तुम्हैं छुटिजायगो मान अबै हमजानी ॥ ४०८ ॥ मदकल अच्छर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० तुहूकहतहौ आपहू समुझत सबैसयान ॥
लखिमोहनमनजोरहै तौमनराखौमान ॥ ४०९॥

यह नायिका प्रौढा सखी कहति है तू मानकरि सो नायिका सखीसों कहतिहै॥ सवैया ॥ मानकिये रमनी जिनके बश प्रीतम होत मतौ यह तेरो । हौंहु यहै अपने चित आनति जानतुहौ करिस्यानु घनेरो ॥ तो करोमानरी मोहनको लखि जोसखी हाथरहै मन मेरो। रूसिबो जीमें बिचारतिहौ पैकहा करो त्योर न होत तरेरो॥४०९॥ मराल अच्छर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मोहिंलजावनलाजये हुलस मिले सब गात ॥
भानउदैकी ओसलौं मान न जानेजात॥४१०॥

नायिका प्रौढा मानमोचन नायिकाको वचनसखीसों॥ कवित्त ॥ तूतो सिखव-ति मनमोहनसों मानकरि मेरेहुहियेमें तू विचार ठहरातरी। निरखत कृष्ण प्राण प्यारे की छबीलीछबि आपही ते हुलासिमिलत सबगातरी ॥ कहा करौं निलजये मोहीं को लजावत हैं कहूं जोपैहोय कछु कहिबे की बातरी। भानुके उदोतभये ओ-सकनकीसी भांति मान मनमें तैंहूं न जानत बिलातरी॥४१०॥करभ अच्छर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० नैना नेक न मानहीं कितो कह्यो समुझाय ॥
तनमनहारेहूहँसैं तिनसों कहाबसाय ॥ ४११ ॥

नायिका प्रौढा नेत्रोपालंभ नायिकाको वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ सहिये जगके उपहासन तें गहिये गुरुलोगन मांझ गसैं । डरआनि यहै अपने उरहौं समझाय रही नहिं नेकत्रसैं ॥ अरु रञ्चक मेरो कह्यो न करैं तनहूं मनहारे कहूं हुलसैं। यह नेम गह्यो सजनी इन नयननु पैहरिहेरि हँसैंई हँसैं ॥ ४११ ॥ मदकल अच्छर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० रहैं निगोड़े नैन डिग गहैं न चेत अचेत ॥
हौंकसुकरि रिसकोकरौं ये निसखेहँसदेत॥४१२॥

यह नेत्रोपालंभ है सखी नायिका को दृढ़ावति है कि तू मान करि नायिका अपने नेत्रनके स्नेहकी आधिक्यइहै सखी सों कहति है ।। सवैया ।। हेतु अहेतु कछू न बिचारत क्योंहूं अचेतन चेत गहैरी । देखत वा मनमोहनकी छबि क्योंहूं लगात न मेरे कहेरी ।। हूं कितनौंके सुकै रिसको करौं ये न सिखेहँसिकै उन हेरी । कैसी करों यह नयनन को यह बान परी डिगिहूके डहेरी ।। ४१२ ।। नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ।।

दो० सकुचनरहियेश्यामसुनि येसतरौंहैं बैन ।।
देतरचौंहँचितकहैं नेहनचौंहैं नैन ।। ४१३ ।।

यह प्रथम समागम नायिकापरकीया सखीको बचन नायक सों ।। सवैया ।। आगे है लीबो यहै इनको उतचाहइतै दृग खैलई है । मानिबेको यहई प्रतिऊतर मानिये बात जुमौनमई है ।। रोसकी बात वहै रसको रुख काहे को केशवछांड़दई है । नाहीं यहां तुम नाहीं सुनी यह नारि नईन की रीति नई है ।। ४१३ ।। मट्ठक अक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ ।।

दो० कहालेहुगे खेल में तजौ अटपटी बात ।।
नेकहँसोहीं है भई भौंहैं सोहैं खात ।। ४१४ ।।

यह नायिका औरसों आसक्त जानि नायिकाने मानकियो नायक मनावनआयो सो वाही नायकको नाम मुहते निकस्यो सो सखी नायकसों वाकेमान छुड़ायबेको परिहासको प्रसंग चलायो सखीको बचन नायक सों ।। सवैया ।। हाँसी तो कीजिये तासों लला जो हँसै सुखपाय नयेतिय ऐसी । बारहीबार लै और को नाम भ्रुकावो इन्हें तजो बानि अनैसी ।। या परिहासपै लेहो कहा करिये तोइते कहिको सुरबैसी । सोहैं किये भई नीठिहँसोंहीं यह भौंह क्रमान मनोजकी ऐसी ।। ४१४ ।। पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ।।

दो० खिचे मान अपराधहूं चलिगेबढ़े अचैन ।।
जुरतदीठि तजरी सखी हँसेदुहुनके नैन ।। ४१५ ।।

यह मानमोचन नायिकाके नेत्र तौ मानसोंखिचे नायकके नेत्र अपराधसों खिचेहैं पै अचैनतें बिना देखे रह्यो न जाय याते रस अरु खिसी आपहीते छोड़िकै दोउनके नेत्र हँसे सखी को बचन सखी सों ।। सवैया ।। मानके भामिनि ऐंचरही दृग रातकहूं हरि अन्त न सेई । याही ते मोहन नारिनवाइरहे उरशोच सकोच गसेई ।।

कृष्ण कहैं बिन देखे दुहूंनके मैनअचैन हिये सरसेई । डीठजुरे तजिरीसखिसी सिवि नयनमिलैं मुख पाइहँसेई ॥ ४१५ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० अजहुँनआयेसहजरँग बिरहदूबरेगात ॥
अबहींकहाचलाइयतललनचलनकीबात४१६॥

यह नायिकाप्रवत्स्यत्पतिका सखी को बचन नायकसों नायिकाहू को बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ खेलतिमें कहूं कान्हकह्यो तुम कालिहहो जैहौं चरावन गाई । सो सुनिके उन दीरघश्वास भरी सबअंगपरी पियराई ॥ तादिनकी वा नवेलीके अंगनि आजहूंलौं न मिटी दुबराई । लालरहौ अनबोलि कहा अबहीं चरचा चलिबे की चलाई ॥ ४१६ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बिलखीडबकौंहैचखन पियलखिगवनबराय ॥
पियगहिबरिआयोगरैं राखीगरैलगाय ॥४१७॥

यह नायिका प्रवत्स्यत्पतिका मध्या वाकी यह दशादेखि नायकने गवन बहरायकै गरेसों लगाय सखी को बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ पतिप्राणपिया बिछुरै न कहूं सुखसों रहै प्रेम पियूष पिये । हितुमानि बिदेशको होनबिदा हरिआयो पयानको आजुकिये ॥ निरखी डबकौंहैसे नैनकिये बिलखी मृगलोचनि सांस लिये । न कही चलिबेकी कछू बतियां छतियां भरिलीनी लगायहिये ॥ ४१७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० ललनचलनसुनचुपरही बोलीआपुनईठि ॥
राख्योगहिगाढ़ेगरौमनोगलगलीडीठि ॥४१८॥

यह नायिका प्रवत्स्यत्पतिका सखीको बचन सखी सों मध्या प्रवत्स्यत्पतिका ॥ कवित्त ॥ प्यारी के भवन अतिहितकरि प्राणपति आयो बिदाहोन परदेश को उमहिकै । ललनचलन सुनि रही अनबोली तिय आलीनहू बचन सुनायो कछू कहिकै ॥ चकितसीभई चकचौंहदुसो छायो हिय आवत सलिलदोऊ नैननते बहिकै । गलीगली डीठिकरि हेरीहेरि सनमुख मे रेजानि राख्यो येही गाढ़ीगरो गहिकै ॥ ४१८ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० ललनचलनसुनिपलनमें अँसुवाझरकेआय ॥
भईलखाइनुसखिनहू झूठेहीजमुहाय ॥ ४१९ ॥

यह नायिका मध्या प्रवत्स्यत्पतिका सखी को बचन सखीसों क्रियाबिदग्धा

परकीयाहूहोय ॥ सवैया ॥ खेलतही सजनी गनमें बृषभानुकुमारि सरूपसों स्रानी। कान्हर कालिह करैंगो पयान सुनी यह काहूके आननबानी ॥ आंखन में अंसुवा झलकैं यह भेदकी बातअलीहू न जानी । यों मुंहमोरि जँभायबेको करि कै मुंह पोंछति नैनसयानी ॥ ४१९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो०रहिहैंचंचलप्राणये कहीकौनकिअरोट ॥
ललनचलनकीचितधरीकलनपलनकीओट॥४२०॥

यह नायिका प्रौढा प्रवत्स्यत्पतिका नायिकाको वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ मैन सुखसंगन में नेहकी तरंगन में अंग अंग पागिरहे रंगमें उमहिहैं । कृष्ण प्राण प्यारे ते न छिनौभर न्यारेभये औरही बसनभये ऐसी बात गहिहैं ॥ पलन की ओट भये कलन कहत क्योंहूं जैसीगति होत सोधौं आवत न कहिहैं । ललन बिचारी चित चलन की बात अब कौनकी अरोट ये चपलप्राण रहिहैं ॥ ४२० ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० चाहभरीअतिरिसभरीबिरहभरीसबगात ॥
कोरिसँदेशेदुहुंनके चलेपौरलौंजात॥ ४२१ ॥

यह प्रदेशको गमन दोऊन के हितकी अधिकाई सखी सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ कौनहूं काजको कान्हर कीन्हो पयान मुहूरत साधभलेई । अन्तर होत दुहूंन को ज्यों अकुलात वियोग के शूलसलेई ॥ चाहभरी अरु प्रीतिभरी रसरीतिभरी बतियां नरलेई । पौरलौं जात दुहूंनकी ओरते आलीरी कोरिसंदेश चलेई ॥ ४२१ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो०मिलिचलिचलमिलिमिलिचलतआंगनअथयोभानु
भयोमुहूरतभोरको पौरीप्रथममिलानु ॥४२२॥

यह प्रदेश पयानको समय सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ सोहैं किये ढरकोहैं से नैन टरैं न कहूं हियकोहिलिये । आगेहूं आये न सूझै कछू रुकह्यो न मुंहश्रुति सामलिये ॥ भोरते सांझ भई न अजौं घर भीतर बाहिर ओटलिये। रहे गेहकी देहरी ठाढे ठगे रटलागी दुहूंन चलौ चलिये ॥ ४२२ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बामाभामाकामिनी कहिबोलोआवेश ॥
प्यारीकहतनलाजनहिंपावसचलतबिदेश४२३

यह नायिका प्रौढ़ा प्रवत्स्यत्पतिका नायिका को बचन नायक सों ॥ सवैया॥ आयेहो आंगन मोपै बिदा इत पावससे घुमड़े घनकारे। कामिनी भामिनी बाम के बोलहू प्यारी कही जिन नेह दुलारे॥ रंचकहू न लजातहिये हित कै अबये दुख दीजतु भारे। ऐसेमें छांड़ि बिदेशचले कहो मेरी कहागति प्राणपियारे॥ ४२३॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० पियप्राणनकीपाहरू करतयतनअतिआप॥
जाकीदुसहदशापरयो सौतिनहूंसंताप॥ ४२४॥

यह नायिका प्रोषितपतिका सखीको बचन सखी सों॥ सवैया॥ तापतपीबिरहानलके बिलखी यह नागरि खीन निहारी। आंखिनही में रहै अब आनि कै प्राणसबै सुधिआनि बिसारी॥ सौतिसबै उपचार करैं गनकै पियप्राणन को रखवारी। दाहनु वाकी दशा निरखे उनहूंके परयो जियसंकट भारी॥ ४२४॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० पावकझरतेमेहझर दाहकदुसहबिशेखि॥
दहैदेहवाकेपरस याहिदृगनहींदेखि॥ ४२५॥

यह नायिका प्रोषितपतिका बिरहिनी नायिका को बचन सखीसों उद्वेगते नायिकाहू सखीसों कहै तो संभव है॥ सवैया॥ धूमधुरे धुरवागहरे अरु अम्बर पूरमही अवगाहै। देखरी पावक की झरतें यह मेहकी ज्वाला कराल महा है॥ वाही भटूपर मैंहीदहै यह नैननही निरखे तन दाहै। वा गिरिधारी बिना बचिबेको तुही कहि और उपाय कहाहै॥ ४२५॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० कहैजुबचनबियोगिनी बिरहबिकलअकुलाय॥
कियेकोरआँसुवासहितसुवातिबोलसुनाय॥ ४२६॥

यह नायिका प्रोषितपतिका सखीको बचन सखी सों॥ सवैया॥ प्राणपती बिनवातियको इकसाथ सबै दुख आन भरे हैं। वाकी दशालखि पासके बासी उसासभरे गहरे गहरे हैं॥ जे कहैं बैन बियोगनिते अकुलाय बियोग बिथान भरे हैं। वे बतियां अब बोल सुवा सबही अँसुवान समेत करे हैं॥ ४२६॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० दुसहबिरहदारुणदशारहैनऔरउपाय॥
जरतजानज्योंराखियतप्रियकोनामसुनाय४२७॥

यह नायिका प्रोषितपतिका बिरहिनी सखीको बचन सखीसों दश अवस्थान के भेदमें व्याधि जानिये ॥ सवैया ॥ प्राणपिया परदेशकियो तिय अंग अनंग तरङ्गनिताये। सीरी ह्वैजात जरै कबहूं उपचार विचार जिते सवछाये॥ ईठनिवाय खवासिहितू मुरझायरही न भये मनभाये। ऐसे कहैं जो बचै तो बचै कहौं गावतेभावते मोहनआये ॥ ४२७ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० रह्योऐंचिअंतनुलहै अवधिदुशासनबीरु ॥
आलीबाढ़तबिरहज्यों पञ्चालीकोचीरु॥ ४२८॥

यह नायिका प्रोषितपतिका प्रौढ़ा नायिकाको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ चैन परै नहीं मैनदहै दिन नैननमांझ रहै जलछायो। भावै न भोजन भौन सुहाइ न हायहिये परताप तचायो॥ ऐंचति औध दुशासनचीरु जऊबलकै तऊ अन्त न पायो। वहके बिछुरे बिरहा सुबढ्यो अब द्रौपदीकेपट ज्यों अधिकायो॥ ४२८॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० तियहियनियजुलगीचलत पियनखरेखखरोट ॥
सूखनदेतिनसरसई खोटिखोटितनखोट॥४२९॥

यह नायिका प्रोषितपतिका सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ सैनमें रंगरंगी रसरंग अनंग तरंग उमंग सुहाई। कान्हरके करकी नखरेख कहूं तियके उरमें लगिआई ॥ पी परदेशगयो जबते तबते ललनी धनको धनपाई। देखत खोट खरोट खरोटनि सूखन देत वहै सरसाई॥ ४२९ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० मरिबेकोसाहसुकरे बढ़ेबिरहकीपीर ॥
दौरतिह्वैसमहींशशिहिसरसिजसुरभिसमीर४३०

यह नायिका प्रोषितपतिका सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ श्री मनमोहन सों जबते बिछुरी तबते न पलौ कल पावति। नीरबिना सफरी ज्यों खरी पै परी तलफैरु भई दुबरी अति ॥ दौरतसामुहे सीर समीर सरोजनलै हियरासों लगावति। ऐसी भईरी दशातनकी अब प्राणपयान की राह बतावति ॥ ४३० ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० बसिसकोचदशबदनबशसांचदिखावतिबाल ॥
सियज्योंशोधततियतनहिं लगनअगनकीज्वाल॥४३१॥

यह नायक नायिका के लगनिके लगेते सनेहकी अधिकाई है याते अगनि-

भई है सो याकी दशा सखी नायकसों निवेदन करति है ॥ कवित्त ॥ जादिन ते लग्यो नवनेह मनभावन सों तादिनते मैनकी मरोरनि मरति है । त्रास गुरु लोगनिके साँसनि सकति भरि एक आश लागी निशि बासर भरति है ॥ बसन सकोच दशबदनके बश याते कछु न बसात ध्यान पतिको धरति है । लगनिकी अगनिकी ज्वालनि में बाल निजदेहको सियालौं वह शोधन करति है ॥ ४३१ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० करीबिरहऐसीतऊ गैलनछांड़तनीचु ॥
दीनेहूंचसमाधरै चाहैलहैनमीचु ॥ ४३२ ॥

यह नायिका प्रोषितपतिका सखीको बचन नायकसों बिरह निवेदनकरि सखी सखीहूसों कहै ॥ कवित्त ॥ अतिही कृशंगी खरी कृशहूते त्रासकरि हरिके बियोग दुखदेह दहियतुहै । नैन नि निहारिनमें नेकहू न डीठि परे सेज तन बसन में सोग लहियतुहै ॥ बरुनी बयारी लागै जिन उड़िजाय शेष सखी के समाज अनमेष रहियतुहै । अतनसी भई सुतो त्रिपदी के बेधबेको मैनहू के नैन उपनैन चहियतुहै ॥ ४३२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० औंधाईसीसीमलखि बिरहबिकलबिललात ॥
बिचहीसूकिगुलाबगो छीटोछुईनगात ॥ ४३३ ॥

यह नायिका प्रोषितपतिका सखी को बचन नायक सों सखीही सों कहै तो बनै ॥ सवैया ॥ बालवधू मनमोहन सों बिछुरे बिलसी दुखदंददवाई । नीरबिना शफरी ज्यों परी तलफै बहुभांति बियोग तचाई ॥ शीतलजानि सखी करुणा करि शीश ते शीश गुलाब निकाई । बीचहीं नीर बिलायगयो सब एकहू छीट न अंगलौंआई ॥ ४३३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० जिहिनिदाघदुपहरभई रहितमाघकीराति ॥
तिहिउशीरकीरावटी खरीआवटीजाति ॥ ४३४ ॥

यह नायिका प्रोषितपतिका बिरह निवेदन सखी को बचन नायकसों सखी को बचन सखीहूसों बनै ॥ सवैया ॥ लाल तिहारे बियोगते बाल बिहाल खरी तरफै शफरीसी । बातनतापके त्रासनते सखि कोऊ न जायसकै नियरीसी ॥ हैरहे जेठकी ज्वालनिमें जहां जाड़ेकी राति तुषारभरीसी । ताही उशीरके धाममें बाम सुनाड़ेकी रातिमें जातजरीसी ॥ ४३४ ॥ त्रिकलअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० सीरेयतननुशिशिरऋतु सहिबिरहनुतनताप ॥
बसिबेकोग्रीषमदिननु परयोपरोसिनपाप ४३५ ॥

यह नायिका प्रोषितपतिका सखी को बचन नायकसों बिरह निवेदन अरु सखीको बचन सखीहूसों संभवहै॥ कबित्त ॥ जानबूझि फेरखात फेर न उतहिजात एकबेर भये जे बड़ोही बाड़गरके। है रह्यो अवा अवास तेज तच्यो आसपास उसते उसासन ज्यों चाहत नगरके॥ जब जब स्वार के समीर इत आवत हैं कान्हजू तिहारी बिरहनिके बगरके। पचत न डरपान पेड़ते परसजातु सोंधेभरिं आलबाल उपटे नगरके॥ ४३५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० गनतीगनबेतेरही छतहूअछतसमान ॥
अबयेतिथिआमरणलौं परेरहौतनप्रान ॥४३६ ॥

यह नायिका प्रौढ़ा प्रोषितपतिका सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ देखु री कैसी करी मनभावन ऐसी धौं वाहि कहा बनिआई। औधिहू बीतिगई न लईसुधि येती धरी उरमें निठुराई॥ तागिनती गिनबेते रहे न भये सभये बिनचा सुखदाई। ये तिथि औमलौंद्योसके सोमलौं प्राणपरे तनमें रहौ माई॥ ४३६ ॥ बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० सुनतपथिकमुँहमाहनिशिलुवैचलतउहिगाम ॥
बिनपूछेबिनहीसुने जियतबिचारीबाम ॥४३७ ॥

यह नायिका प्रोषितपतिका बिदेश में पथिकके मुखकी बात सुन नायकने अटकरते याकी दशा जानी सखी को बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ शीतसमैं की रात में लूवें चलैं उहिदेश हुताशन सानी। आपस में बतरात बड़ोही अचानक कानपरी यह बानी॥ छांड़ि दिये सबकाज बिदेशी की बुद्धितहीं घर को अकुलानी। प्राणपियारी की आयगई सुधि जीवत है जियमें यह जानी॥ ४३७ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० आड़ेदैआलेबसन जाड़ेहूकीराति ॥
साहसककैसनेहबश सखीसबैढिगजाति ॥४३८॥

यह बिरहनिवेदन प्रोषितपतिका सखीको बचन नायकसों सखी सखीहूसों कहै॥ कबित्त ॥ लाल बनमाली बिछुरेते ब्रजबाल भई निपट बिहाल बिथ

बरसरसाति है । अतनसताई वाके तनकी तताईदेखे बृषके तरणिहूंकी किरणि सिराति है ॥ करत उपाय हाय कहि बारबार मीड़ि मीड़िकर करनि निपट अकुलाति है । आड़िदे बसन अलि जाड़ेहूकी रातमांझ साहसकै नेहनाते सखी ढिगजाति है ॥ ४३८ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मारसुमारकरीडरी मरीमरीहिनमारि ॥
सींचिगुलाबघरीघरी बरीबरीहिनबारि॥ ४३९ ॥

यह नायिका प्रोषितपतिका उद्वेगदशा नायिकाको बचन सखी सों अन्तरङ्ग सखी सखीहूसों कहै तो बनै ॥ कबित्त ॥ बालम बियोगते बिकल अति प्राण कछू सूझत न आन बन्यो दुखही को दावरी । और उपचारकरि मारि न मरेको जो हितु है तो तू कृष्ण प्राणप्यारे को मिलावरी ॥ घरीघरी सींचत गुलाब के सलिलसों तू कियो कहा चाहति है माहूधौं बावरी । भरत घरी पै मारी मार की डरी है विरहागिनि बरी ये अब बारि जिन बावरी ॥ ४३९ ॥ मच्छ अक्षर ४१गुरु १७ लघु २४ ॥

दो० पलनुप्रकटबरनीनबढ़ि नहिंकपोलठहरात ॥
अँसुवापरछतियांछिनकुछनुछनायछपिजात ४४०

यह नायिका प्रोषितपतिका मध्य सखी को बचन सखी सों ॥ कवित्त ॥ बाल नन्दलाल के वियोगते बिकल याते पलपल बिच कैसे बासर बिहात हैं । बिरह तताकी बदन बरणी न जाति येते मानतचे वाके कुसुमसे गात हैं ॥ पलनुते प्रकट बढ़त बरनीनहूंते परत कपोलनै तुरत ढरिजातहैं । सलिलकी बूंद ताती छतियां पै परत ऐसे छातीपर अँसुवा छनकि छपिजात हैं ॥ ४४० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० फिरिसुधिदेसुधिद्यायप्यो इहनिरदई निरास ॥
नईनईबहुर्‍योदई दईउसासउसास ॥ ४४१ ॥

यह नायिका प्रोषितपतिका याकी अवस्था सखी सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ आली बियोग भयो बनमाली को ब्याकुल बालखरी अकुलाई । पाहनकी पुतरी है परी उपचार बिचार कछू न बसाई ॥ ऐसेमें बाहिदई सुधिदै सुध धाय पिया दुखराशि जगाई । वा निरदैसों कहा कहिये जिन प्रेम मरूरकी पीर न पाई ॥ ४४१ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बिरहजरीलखिजीगननु कह्योनडहिकैबार ॥
अहेआवभजिभीतरी बरसतआजअँगार॥४४२॥

यह नायिका प्रोषितपतिका उद्वेग दशा सखी को बचन सखी सों नायकहू सों बिरह निवेदन बनै ॥ कबित्त ॥ बैसकी किशोरी गोरी शोभा बरणी न जात गात की निकाई छबि नाहीं काहू जोन में । बासरु गँवायो खेलि जियमें बियोग बेलि सांझ समय चित्रशाढ़ी बैठि पियभौनमें ॥ औधिके व्यतीत भये रंचकौ न कलपरी व्याकुलसी भई जात सीरे मंदपौन में । नीचेते उठाय नारि डीठि परे जागना सुआगि आगिकैकै भाजगई प्यारी भौन में ॥ ४४२ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० इतआवतचलिजातउत चलीछसातकहाथ ॥
चढ़ीहिंडोरेसैंरहे लगीउसासनसाथ ॥ ४४३ ॥

यह नायिका प्रोषितपतिका सखीको बचन बिरह निवेदन नायकसों और सखीको बचन सखीसों दुर्बलता अधिक है उसासनते मुकरता न संभव है ॥ सवैया ॥ मोहनलाल चलोचलि देखिये आपहीजाय बियोगनके ढंग । थोरेही द्योसनते लखिये सब देहभई जरदी हरदी रंग ॥ बैसहूके भरमें यहभांति परे बरहीन खरे दुबरे अंग । पैंड़छसात हिंडोरेसे बैठी जु आवतजाति उसासन के संग ॥ ४४३ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नेकनझरसीबिरहझर नेहलताकुम्हिलाति ॥
छिनछिनहोतखरीखरी खरीफैलतीजाति॥४४४॥

यह नायिका प्रोषितपतिका नायिकाको बचन सखी सों अरु नायकको बचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ नंदके दुलारे प्यारे न्यारे भये जबहींते तबहींते तातीह्वैकै छाती अकुलाति है । सुधिआये घरी घरी शूलसे मलतउर प्राणपरे परवश कछु न बसाति है ॥ दारुण बिरह झार यद्यपि सनेहलता झरसी तद्यपि नेकहू न कुम्हिलाति है । दिनदिन छिनछिन उमंगि अधिकहोत हरीहरी खरीखरी झालरतिजाति है ॥ ४४४ ॥ करभ अक्षर ३३ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० याकेउरऔरैकछू लगीबिरहकीलाय ॥
प्रजरैनीरगुलाबको पीकीबासबुझाय ॥ ४४५ ॥

यह नायिका प्रोषितपतिका नायिकाकी अवस्था सखी सखी सों कहति है॥

सवैया ॥ ऐसीदशा लखिहू अकुलाति किते उपचार विचारतकोरी । आननबोलै न खोलै बिलोचनि दूबरी होत छिनै छिन पीरी ॥ याके हिये कछु और अनोखी बियोग हुताशन ज्वाल जगीरी । नीरगुलाब के दूनी बरै प्रिय प्यारेकी आवही होत है शीरी ॥ ४४५ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० होमतसुखकरिकामना तुमहिंमिलनकीलाल ॥
ज्वालमुखीसीजरतलखिलगनिअगनिकीज्वाल४४६

यह नायिकाकी लगनिकी ज्वालकी अधिकाई सखी नायकसों कहति है ॥ कवित्त ॥ कृष्ण प्राणप्यारे लाल जबहींते भये न्यारे तबहींते प्यारी पल कल न धरतिहै । ससकि ससकि अति उरमें उसासें लेत तलफि तलफि सुधि बुधि बिसरति है ॥ बिरह हुताशनकी निरखि प्रचंडज्वाल निहचै हियेमें ज्वालमुखी को धरति है । मिलिबेकी कामना हिये में करि इंदुमुखी अब सब सुखनि को होमसो करति है ॥ ४४६ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० नितसंसोहंसोबचतु मनोसुयहउनमान ॥
बिरहअगनिलपटनसकै झपटनसींचसिचान४४७

यह नायिका प्रोषितपतिका सखीको वचन सखीसों कहै सो बिरहनिवेदन होय ॥ सवैया ॥ बिछुरे पियऊसनको बिषयो वह कौन कथा जु कहावतिहै । तुमसों सुकह्यो तिययोगजियै जिनजानहु बात बनावति है ॥ उहि नागर की तनताप जु है हित है करि सो दरशावतिहै । उरदाहनि वा बिरहानलके बलि या यह मीच न आवति है ॥ ४४७ ॥ बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

सो० बिरहसुखाईदेह नेहकियोअतिडहडहो ॥
जैसेबरसैमेह जरैजवासोजोजमै ॥ ४४८ ॥

यह नायिका प्रोषितपतिका बिरहकी अरु सनेहकी अधिकाई सखीसोंकहै अरु नायकहू सखीसों अपनी अवस्था कहै तो संभवहै ॥ सवैया ॥ देखो बियोगन देह सुखाय करी दुबरी रह्यो मांस न मासो । नेहलता उलहाय हरी करी हेरि सखी-नहूंकै परखोमासो ॥ आवत है जियमें उपमा कवि कृष्ण कहै यह देखु तमासो । ज्यों बरसे घनपावसके सब और जमै जरै आकजवासो ॥ ४४८ ॥ बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० बिरहबिथादिनपैरही तजैसुखनसबअंग ॥

रहिअबलौंबटुखोभयोचलाचलौंजियसंग॥४४९॥

यह नायिका प्रोषितपतिका नायिकाको बचन सखीसों अरु सखी सखीसों कहै तौहू संभवहै ॥ कबित्त ॥ जौलौं प्राणनायके समीपरही तौलौं अङ्ग अङ्ग सरसाने सुख उमंगि उमंगिकै। न्यारे होत प्यारेके बियोग बिथा बाढ़तही नातो करि हातो वे अगाऊ गये भगिकै ॥ दुखकी निकाई कछु बरणी न जात माई येतौ दुख सह्यो तऊ रह्यो प्रेमपगिकै।पैनभयो हीनोरी यहांलौंसोथदीनो अवचलिवो बिचार्‌यो संग प्राणन के लगिकै ॥ ४४९ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० छतौंनेहकागरहिये भयोलखाइनटांकु॥

बिरहतचैंउघर्‌योसुअबसौंहडिकोसोआंकु ४५०॥

यह नायिका प्रोषितपतिका सखीको बचन सखीहूसों नायकहूको बचन सखीसों संभवहै॥सवैया॥ जौलौं समीप रह्यो हरि तौ लग मैं अपनो मनभायो कर्‌योई। काहूलख्यो यहभेद न जीयको यद्यपि हौं सबभौंनभर्‌योई ॥ नेह छतोई हुतो हिय कागर कौनहूं भांति न जानिपर्‌योई। सौंहडिकोसो लिखाव अली बिरहागितचैं अबतो उघर्‌योई ॥ ४५० ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० प्रजर्‌योआगिबियोगकी बह्योबिलोचननीर॥

आठौंयामहियेरहै उड्योउसाससमीर॥४५१॥

यह अवस्था बिरहकी नायक अथवा नायिका अपनी अवस्था सखीसों कहत है॥ कबित्त॥ सबहीते कठिन सनेहकी हिलग यह किन सुखपायो मन प्रेमपन्थ ढारिकै। जाके तनलागे सोही जानतहै भेदयह बेदन बिषम कौन सकत सम्हारिकै॥ कहै कबिकृष्ण यह और अद्भुतगति प्रजर्‌यो बियोग आगि बह्यो दृग बारिकै। तऊ देखो आठोयाम उड्योई रहत हीयो दीरघ उसासनकी प्रबल बयारि कै॥ ४५१॥मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

सो० मैंलखिनारीज्ञान करराख्योनिरधारयह॥

वहईरोगनिदान वहैबयदऔषधवहै॥४५२॥

यह लगन सखीको बचन सखीसों। अंतरंग सखीको कहिबोहै अरु नायिकाहू अपनी अवस्था सखीसों कहै तो संभव है॥ सवैया॥ काहेको घोरघनोघनसार बृथा उपचारनु कैतनुबारो। मो लखि नारकरुयो निरधार, लहै यह भेद न बेद बिचारो॥ जाको स्वरूप खुभ्यो उरमें किन ताहि दिखाय व्यथा यह टारो।

औषध बैद बहै उचार बहै पुनि रोग निदान निहारो ॥ ४५२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तच्योआंचअतिबिरहकी रह्योप्रेमरसभीजि ॥
नैननकेमगजलबहै हियोपसीजिपसीजि॥४५३॥

यह नायिकाकी अथवा नायक की बिरहकी अवस्था सखी सखीसों कहति है ॥ सबैया ॥ जादिनते ब्रजनागरिको मन नंदकिशोरके नेह नच्यो। तादिनते दिनरैनढरै अँसुवा तिनको यह भेदलख्यो ॥ आंचतच्यो बिरहानल की हितके रस में अति भीजरह्यो। ताहीते अंग पसीजहियो बिबिनैननके मग नीरबह्यो॥४५३॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पावकझरतेमेहझर दाहकदुसहबिशेखि ॥
दहैदेहवाकेपरस याहिदृगनहीदेखि ॥ ४५४ ॥

यह उद्वेगदाहा नायिकाको अथवा नायकको बचन सखीसों ॥ सबैया ॥ धूम धुरे धुरवागहरे अरु अंबुमपूर मही अवगाहै। देखरी पावककी झरते नेह मेहकी ज्वालकराल महाहै ॥ वाहिमहू परसेही दहै यह नैननही निरखे तन दाहै। वा गिरिधारीबिना बचिबेको तुही कहु और उपाय कहा है ॥ ४५४ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० कौनसुनैकासोंकहौं सुरतबिसारीनाह ॥
बदाबदीज्योंलेतहै येबदराबदराह ॥ ४५५ ॥

यह नायिका प्रोषितपतिका बिरहकी दशा अथवा भेद में चिन्ता नायिकाको बचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ कासों कहौं कौन यहजाने उरअन्तरकी सुरत बिसारी सुखकारी हरिनाहरी। येतेपर बरज्यो न मानै क्योंहूं प्राण लेत बदाबदी बदरा निपट बदराहरी ॥ अंगहोत बिकल अनंग तन तावत है कौन हरै बेदन रहत चित चाहरी। कृष्ण प्राणप्यारे की दुहाई न सुहाई कछु बरसत नैननते सलिल प्रवाहरी ॥ ४५५ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० श्यामसुरतिकरराधिका तकतितरणिजातीर ॥
अँसुवनिकरतितरौसको खिनकखरोहोनीर ४५६॥

यह नायिका प्रोषितपतिका दश अवस्था के भेद समस्त सखी को बचन सखी सों ॥ सबैया ॥ श्रीमनभावनके बिछुरे बृषभानुसुता अतिही अकुलानी।